رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

इस्लामी अक़ीदा (आस्था) संक्षिप्त में

نُبَذَةٌ فِي العَقِيدَةِ الإِسْلَامِيَّة (شَرْحُ أُصُولِ الإِيمَانِ)

هندي

हिन्दी

लेखक फ़ज़ीलतुश् शैख़ अल्लामा
मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन
अल्लाह तआला उनकी तथा उनके माता-पिता और समस्त मुसलमानों
की मग़्फ़िरत फ़रमाये

نُبذَةٌ فِي العَقِيدَةِ الإِسْلَامِيَّة

(شَرْحُ أُصُولِ الإِيمَانِ)

इस्लामी अक़ीदा (आस्था) संक्षिप्त में

بِقَلَم فَضِيلَة الشَّيخ العَلَّامَة

مُحَمَّدِ بْنِ صَالِحِ العُثَيمِين

غَفَرَ اللَّهُ لَهُ وَلِوَالِدَيْهِ وَلِلْمُسْلِمِين

लेखक फ़ज़ीलतुश् शैख़ अल्लामा

मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन

अल्लाह तआला उनकी तथा उनके माता-पिता और समस्त मुसलमानों की मग़्फ़िरत फ़रमाये

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيم

इस्लामी अक़ीदा (आस्था) संक्षिप्त में

लेखक फ़ज़ीलतुश् शैख़ अल्लामा
मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन

अल्लाह तआला उनकी तथा उनके माता-पिता और समस्त मुसलमानों की मग़्फ़िरत फ़रमाये

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूं), जो बड़ा दयालु एवं कृपालु है।

प्रस्तावना

सारी प्रशंसा अल्लाह की है। हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता माँगते हैं, उसी से क्षमा माँगते हैं और उसी की ओर लौटते हैं, हम अपने नफ़्सों (आत्माओं) की बुराइयों से तथा अपने बुरे कर्मों से उसकी शरण माँगते हैं, जिसे अल्लाह सत्य का मार्ग दिखाए उसे कोई पथभ्रष्ट नहीं कर सकता और जिसे वह पथभ्रष्ट करे उसे कोई सत्य का मार्ग दिखा नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं, अल्लाह की रहमत हो उन पर, उनके परिवार पर, उनके साथियों पर और उन पर जिन्होंने अच्छाई के साथ उनका अनुसरण किया तथा उनको पूर्ण शांति मिले।

स्तुतिगान के पश्चातः तौहीद शास्त्र (एकेश्वरवाद का ज्ञान) सब से अधिक प्रतिष्ठित, अतिश्रेष्ठ और अति आवश्यक ज्ञान है, क्योंकि इस ज्ञान का सम्बंध अल्लाह तआला की ज़ात (अस्तित्व), उसके अस्मा (नामों) व सिफ़ात

(गुणों) और मनुष्यों पर उसके अधिकारों से है। और इसलिए भी कि यह अल्लाह तक पहुंचाने वाले मार्ग का प्रारम्भिक बिंदु (कुंजी) और उसकी ओर से उतारे गए समस्त धर्म-शास्त्रों का मूल आधार है।

यही कारण है कि तौहीद की ओर आमन्त्रण देने पर तमाम नबियों और रसूलों की सहमती रही है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ٢٥﴾

अनुवादः (और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर यही वह्य (प्रकाशना) करते थे कि मेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत करो।) [सूरह अल-अंबिया : 25]

और अल्लाह तआला ने स्वयं अपनी वहदानियत (अकेले उपासना योग्य होने) की गवाही दी है, और उसके फ़रिश्तों ने और ज्ञानियों ने भी उसके लिए इसकी गवाही दी है, सर्वोच्च अल्लाह फ़रमाता है:

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلۡعِلۡمِ قَآئِمَۢا بِٱلۡقِسۡطِۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ١٨﴾

अनुवादः (अल्लाह साक्षी है, जो न्याय के साथ क़ायम है कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।) [सूरा आल-इमरान : 18]

जब तौहीद की यह प्रतिष्ठा और महानता है तो प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह ध्यान के साथ इस ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करे, इसकी शिक्षा दे, इसके अन्दर चिंतन करे,और इस पर विश्वास रखे, ताकि वह अपने धर्म की

स्थापना उचित आधार और संतोष तथा स्वीकृति और प्रसन्नता पर करे और उसके प्रतिफल और परिणामों से लाभान्वित हो।

अल्लाह -तआ़ला- ही तौफ़ीक़ (क्षमता आदि) देने वाला है।

लेखक

***

इस्लाम धर्म:

इस्लाम धर्म: वह धर्म है जिसके साथ अल्लाह तआला ने मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को भेजा, उसी धर्म के द्वारा अल्लाह तआला ने सारे धर्मों की समाप्ति कर दी, अपने बन्दों के लिए उसे पूरा कर दिया, उसी के द्वारा उन पर अपनी नेमतें सम्पूर्ण कर दीं और उनके लिए उसी धर्म को पसंद कर लिया, अब किसी भी व्यक्ति से उसके अतिरिक्त कोई अन्य धर्म स्वीकार नहीं करेगा, अल्लाह तआला का कथन है:

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا ۝٤٠﴾

अनुवादः (मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। किन्तु, वे अल्लाह के रसूल और सब नबियों में अन्तिम हैं और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।) [सूरा अल-अहज़ाब :40]

तथा अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿...ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًا...﴾

अनुवादः (मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप

चुन लिया है।) [सूरा अल-माइदा : 3]

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلۡإِسۡلَٰمُ...﴾

अनुवादः (निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है।) [सूरा आल-ए-इमरान : 19]

और अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ٨٥﴾

अनुवादः (और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़ से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।) [सूरा आल-ए-इमरान : 85]

अल्लाह तआला ने सारे लोगों पर यह बात अनिवार्य कर दिया है कि वह इसी इस्लाम धर्म के द्वारा अल्लाह की उपासना और आज्ञापालन करें,अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को संबोधित करते हुए फ़रमाया:

﴿قُلۡ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّي رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيۡكُمۡ جَمِيعًا ٱلَّذِي لَهُۥ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحۡيِۦ وَيُمِيتُۖ فَـَٔامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِ ٱلنَّبِيِّ ٱلۡأُمِّيِّ ٱلَّذِي يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَكَلِمَٰتِهِۦ وَٱتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ ١٥٨﴾

अनुवादः (आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ, जिसकी बादशाही सभी आसमानों और ज़मीन पर है, उसके सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं, वही जीवन और मृत्यु देता

है, अत: अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके अनपढ़ नबी पर, जो कि अल्लाह पर और उसके आदेशों पर ईमान रखते हैं और उनका अनुसरण करो, ताकि तुम्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो।) [सूरा अल-आराफ़: 158]

एवं सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

«وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَا يَسْمَعُ بِي أَحَدٌ مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ يَهُودِيٌّ وَلَا نَصْرَانِيٌّ، ثُمَّ يَمُوتُ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَّا كَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ».

क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मोहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की जान है, मेरे विषय में इस उम्मत का जो कोई भी सुने चाहे वह यहूदी हो या ईसाई हो, फिर वह मेरी रिसालत पर ईमान लाए बिना मर जाए तो वह जहन्नमी होगा।

आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि :आप की लाइ हुई शरीअत (धर्म शास्त्र) को सच्चा जानने के साथ ही उसे स्वीकार किया जाए और उसे मान लिया जाए, केवल उसको सच्चा जानना काफी नहीं है, यही कारण है कि अबू तालिब मोमिन नहीं घोषित हुये जबकि वह आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की लाई हुई शरीअत को सच्चा जानते थे और यह गवाही देते थे की वह सब से उत्तम धर्म है।

इस्लाम धर्म : उन समस्त हितों, भलाइयों और अच्छाइयों को सम्मिलित है जो पिछले धर्मों में पाई जाती थीं, तथा उसको उन पर यह विशेषता प्राप्त है कि वह प्रत्येक युग, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक क़ौम (समुदाय) के लिए उचित है, अल्लाह तआला ने अपने रसूल -सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम- को

संबोधित करते हुए फ़रमाया :

﴿وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَمُهَيۡمِنًا عَلَيۡهِ...﴾

"और (ऐ नबी!) हमने आपकी ओर यह पुस्तक (क़ुरआन) सत्य के साथ उतारी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि करने वाली तथा उनकी संरक्षक है।" [सूरा अल-माइदा : 48]

और इस्लाम के प्रत्येक युग, प्रत्येक स्थान, प्रत्येक क़ौम (समुदाय) के लिए उचित होने का अर्थ यह है कि इस धर्म को ग्रहण करना और उसकी पाबन्दी करना किसी भी युग किसी भी स्थान पर उम्मत (लोगों) के हितों के विपरीत नहीं हो सकता, बल्कि इसमें उसकी भलाई और कल्याण है, उसका यह अर्थ नहीं है कि इस्लाम प्रत्येक युग और प्रत्येक स्थान और प्रत्येक उम्मत की इच्छा के अनुकूल होगा, जैसा की कुछ लोगों का विचार है।

इस्लाम धर्म ही वह सच्चा धर्म है जिसको सुदृढ़ता से पकड़े रहने वाले के लिए अल्लाह तआला ने सहायता और सहयोग तथा उसे दूसरे लोगों पर विजय और अधिपत्य प्रदान करने का दायित्व लिया है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿هُوَ ٱلَّذِيٓ أَرۡسَلَ رَسُولَهُۥ بِٱلۡهُدَىٰ وَدِينِ ٱلۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهُۥ عَلَى ٱلدِّينِ كُلِّهِۦ وَلَوۡ كَرِهَ ٱلۡمُشۡرِكُونَ ٩﴾

(वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्य धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा, ताकि उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, भले ही बहुदेववादियों को बुरा लगे।) [सूरत अस-सफ़्फ़: 9]

अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنكُمۡ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَيَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِي ٱلۡأَرۡضِ كَمَا ٱسۡتَخۡلَفَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمۡ دِينَهُمُ ٱلَّذِي ٱرۡتَضَىٰ لَهُمۡ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّنۢ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ أَمۡنٗاۚ يَعۡبُدُونَنِي لَا يُشۡرِكُونَ بِي شَيۡـٔٗاۚ وَمَن كَفَرَ بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡفَٰسِقُونَ ٥٥﴾

"अल्लाह ने वचन दिया है उन्हें, जो तुम में से ईमान लाए तथा सुकर्म किया कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा, जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया, जो इन से पहले थे तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उनके उस धर्म को, जिसे उनके लिए पसंद किया है तथा उन (की दशा) को उनके भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा, वह मेरी इबादत (वंदना) करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनाएं और जो कुफ़्र करें इसके पश्चात्, तो वही उल्लंघनकारी हैं।" [सूरा अल-नूर : 55]

इस्लाम धर्म: अकीदा (श्रद्धा, आस्था) और शरीअत (धर्म शास्त्र) का नाम है, और वह अकीदा और शरीअत दोनों में अति परिपूर्ण है, चुनांचे वह:

1- अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) का आदेश देता है और शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से रोकता है।

2- सत्यवादिता का आदेश देता है और झूठ से रोकता है।

3- अद्ल अर्थात न्याय का आदेश देता है और अत्याचार से रोकता है।

अद्ल की परिभाषा : सदृश्य (एक जैसी) चीजों के बीच समानता और बराबरी पैदा करने और विभिन्न चीजों के बीच भिन्नता पैदा करने का नाम अद्ल है। अद्ल अर्थात न्याय का अर्थ सामान्यतः बराबरी और समानता नहीं है अर्थात समस्त चीजों के बीच समानता और बराबरी स्थापित करने का नाम अद्ल नहीं है, जैसा कि कुछ लोगों का दावा है, वह कहते हैं कि इस्लाम सामान्य

रूप से समानता और बराबरी का धर्म है, हालांकि विभिन्न और विपरीत चीजों के बीच बराबरी एक अत्याचार है जो इस्लाम की शिक्षा नहीं है, और न ही ऐसा करने वाला इस्लाम की दृष्टि में सराहनीय है।

4- अमानत का आदेश देता है और खेयानत (गबन) से रोकता है।

5- प्रतिज्ञा पालन का आदेश देता है और विश्वास घात तथा प्रतिज्ञा भंग से मना करता है।

6- माता पिता के साथ अच्छे व्यवहार का आदेश देता है और अवज्ञा से रोकता है।

7- निकटवर्ती रिश्तेदारों (संबंधियों) के साथ नाता और सम्बंध जोड़ने का आदेश देता है और सम्बंध-विच्छेद से रोकता है।

8- पडोसियों के साथ अच्छे व्यवहार का आदेश देता है और दुर्व्यवहार से रोकता है।

सामान्य रूप से कहा जा सकता है किः इस्लाम हर अच्छे आचरण का आदेश देता है और हर बुरे आचरण से मना करता है। इसी प्रकार, इस्लाम हर अच्छे कार्य का आदेश देता है और हर बुरे कार्य से मना करता है।

अल्लाह तआला ने कहा :

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يَأۡمُرُ بِٱلۡعَدۡلِ وَٱلۡإِحۡسَٰنِ وَإِيتَآيِٕ ذِي ٱلۡقُرۡبَىٰ وَيَنۡهَىٰ عَنِ ٱلۡفَحۡشَآءِ وَٱلۡمُنكَرِ وَٱلۡبَغۡيِۚ يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُونَ ٩٠﴾

"निःसंदेह अल्लाह न्याय और उपकार और निकटवर्तियों को देने का आदेश देता है और अश्लीलता एवं बुराई तथा सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम नसीहत हासिल करो।" [सूरा अन-नह्ल : 90]

***

इस्लाम के स्तंभ

इस्लाम के स्तंभ: यह वे बुनियादी तत्व हैं जिन पर इस्लाम की संरचना आधारित है, और ये पाँच हैं:

مَذْكُورَةٌ فِيمَا رَوَاهُ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: «بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسَةٍ: عَلَى أَنْ يُوَحَّدَ الله - وَفِي رِوَايَةٍ عَلَى خَمْسٍ -: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصِيَامِ رَمَضَانَ، وَالْحَجِّ» فَقَالَ رَجُلٌ: الْحَجُّ، وَصِيَامُ رَمَضَانَ؟ قَالَ: «لَا، صِيَامُ رَمَضَانَ، وَالْحَجُّ» هَكَذَا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

इसे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "इस्लाम पाँच स्तंभों पर आधारित है: अल्लाह की एकता पर विश्वास -और एक रिवायत में ख़मस्तिन के स्थान पर ख़म्सिन का शब्द है (दोनों का अर्थ एक ही है)-: इस बात की गवाही कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात अदा करना, रमज़ान के रोज़े रखना तथा ह़ज्ज करना।" एक आदमी ने पूछा: ह़ज्ज और रमज़ान के रोज़े? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "नहीं, रमज़ान के रोज़े और ह़ज्ज।" मैंने इसे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से इसी तरह सुना है।

1- इस्लाम के प्रथम स्तम्भ अर्थात केवल अल्लाह तआला के वास्तविक

उपास्य होने और मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के अल्लाह का बंदा और संदेशवाहक होने की गवाही (साक्ष्य) देने का अर्थ यह है कि: मुख से जिस बात की गवाही दी जा रही है उस पर ऐसा दृढ़ विश्वास रखा जाए कि मानो बंदा उसे देख रहा हो। इस स्तम्भ में एक से अधिक बातों की शहादत होने के बावजूद उसे एक ही स्तम्भ माना गया है उसका कारण:

या तो यह हो सकता है कि चूंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की ओर से सन्देश पहूंचाने वाले हैं, अतः आप के लिए अल्लाह का बन्दा (उपासक) एवं रसूल (संदेशवाहक) होने की गवाही देना अल्लाह के वास्तविक उपास्य होने की गवाही देने का पूरक है।

या इसलिए किः ये दोनों गवाहियां (शहादतैन) किसी भी काम की सत्यता और स्वीकृति की आधारशिला हैं, क्योंकि किसी भी कार्य की सत्यता और स्वीकृति केवल अल्लाह के प्रति निष्ठा और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अनुसरण के द्वारा ही संभव है।

अल्लाह के प्रति निष्ठा से "ला इलाहा इल्लल्लाह" की गवाही पूर्ण होती है, और रसूलुल्लाह के अनुकरण से "मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु" की गवाही सही ठहरती है।

इस गवाही के कुछ महान प्रतिफल यह हैं कि : इस के द्वारा मनुष्य की दासता (गुलामी) और पैगम्बरों के अतिरिक्त किसी के अनुसरण (पैरवी) से हृदय और प्राण मुक्त हो जाते हैं।

2- नमाज़ स्थापित करने का मतलब यह है कि : नमाज़ को उसके ठीक समय और सटीक पद्धति (तरीके) के अनुसार उचित और सम्पूर्ण रूप से अदा करके अल्लाह की इबादत की जाए।

नमाज़ के कुछ प्रतिफल यह हैं कि : इस से हृदय को प्रफुल्लता और

आँखों को ठंडक प्राप्त होती है, और आदमी बुराईयों तथा अनुचित कामों से दूर होता है।

3- ज़कात (अनिवार्य धार्मिक-दान) देने का अर्थ यह है कि: जिन संपत्तियों में ज़कात ज़रूरी है उनमे से ज़कात की निर्धारित मात्रा निकाल के अल्लाह तआला की उपासना (इबादत) की जाए।

इसके कुछ प्रतिफल यह है कि: इसके द्वारा आत्मा घटिया और तुच्छ स्वभाव (कंजूसी) से पवित्र हो जाती है, और इस्लाम तथा मुसलमानों की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

4- रमज़ान का रोज़ा (व्रत) रखने का अर्थ यह है कि: रमज़ान के दिनों में रोज़ा तोड़ने वाली चीजों से रुक कर अल्लाह तआला की इबादत करना।

रमज़ान के रोज़े का एक प्रतिफल यह है कि: इस से अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए नफ्स (आत्मा) को प्रिय चीजों के त्यागने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

5- अल्लाह तआला के घर (काबा) का हज्ज करने का अर्थ है: अल्लाह तआला की उपासना और आराधना में हज्ज के शआइर (कार्यो) को अदा करने के लिए अल्लाह के पवित्र घर की ज़ियरत करना।

हज्ज का एक प्रतिफल यह है कि: इससे अल्लाह तआला के आज्ञापालन में आर्थिक एवं शारीरिक बलिदान पेश करने पर आत्मा का अभ्यास होता है, यही कारण है कि हज्ज को अल्लाह के मार्ग में जिहाद का एक भाग बताया गया है।

इन नींवों के जिन प्रतिफलों का हमने उल्लेख किया है और जिनका उल्लेख नहीं किया है, वे इस समुदाय को एक पवित्र और शुद्ध इस्लामी समुदाय बना देते हैं, जो अल्लाह के सच्चे धर्म की पाबंदी करती है और सृष्टि

के साथ न्याय और सच्चाई के साथ व्यवहार करती है। क्योंकि इस्लाम की अन्य सभी शिक्षाएँ इन आधारों की सुधार पर निर्भर करती हैं, और समुदाय की स्थिति उनके धर्म की सही स्थिति पर निर्भर करती है, और उनकी स्थिति में जितनी कमी होती है, वह उनके धर्म की स्थिति में कमी के बराबर होती है।

जो इस बात का अधिक स्पष्टीकरण चाहता हो उसे अल्लाह तआला का यह कथन पढ़ना चाहिए :

﴿وَلَوۡ أَنَّ أَهۡلَ ٱلۡقُرَىٰٓ ءَامَنُواْ وَٱتَّقَوۡاْ لَفَتَحۡنَا عَلَيۡهِم بَرَكَٰتٖ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ وَلَٰكِن كَذَّبُواْ فَأَخَذۡنَٰهُم بِمَا كَانُواْ يَكۡسِبُونَ ٩٦ أَفَأَمِنَ أَهۡلُ ٱلۡقُرَىٰٓ أَن يَأۡتِيَهُم بَأۡسُنَا بَيَٰتٗا وَهُمۡ نَآئِمُونَ ٩٧ أَوَأَمِنَ أَهۡلُ ٱلۡقُرَىٰٓ أَن يَأۡتِيَهُم بَأۡسُنَا ضُحٗى وَهُمۡ يَلۡعَبُونَ ٩٨ أَفَأَمِنُواْ مَكۡرَ ٱللَّهِۚ فَلَا يَأۡمَنُ مَكۡرَ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ ٩٩﴾

{और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते। परन्तु उन्होंने झुठला दिया, अतः हम ने उन के कर्तूतों के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया। तो क्या नगर वासी इस बात से निश्चिन्त हो गए हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाए, और वह पड़े सो रहे हों? अथवा नगर वासी निश्चिंत हो गए हैं कि उन पर हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों। तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चिंत हो गए? हैं तो (याद रखो) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाश होने वाली जाति ही निश्चिंत होती है}। [सूरा अल-आराफ़ : 96-99]

इसी प्रकार स्पष्टीकरण चाहने वाले को पिछली उम्मतों के इतिहास में भी विचार और चिंतन करना चाहिए, क्योंकि इतिहास बुद्धिमान लोगों के लिए

पथ और उपदेश तथा जिस के हृदय पर पर्दा न पड़ा हो उस के लिए नसीहत है, और अल्लाह तआला ही सहायक है।

***

इस्लामी अक़ीदा (श्रद्धा) के मूल आधार

इस्लाम धर्मः -जैसा कि पूर्व में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि- अक़ीदा (आस्था) और शरीअत (धर्म शास्त्र) का नाम है, और हम उसके आदेशों की ओर पिछली पंक्तियों में संकेत कर चुके हैं और उस के उन स्तंभों का भी उल्लेख कर चुके हैं जो इस्लाम के आदेशों के लिए आधार समझे जाते हैं।

इस्लामी अक़ीदा के मूल आधार यह हैं: अल्लाह पर ईमान लाना, अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाना, उस की उतारी हुई पुस्तकों पर ईमान लाना, उस के रसूलों पर ईमान लाना, आख़िरत के दिन पर ईमान लाना, और भली बुरी तक़दीर (भाग्य) के (अल्लाह की ओर से होने) पर ईमान लाना।

इन मूल आधारों पर अल्लाह तआला की पुस्तक (क़ुरआन) और उस के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सुन्नत में पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं।

क़ुरआन -ए- करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿لَّيۡسَ ٱلۡبِرَّ أَن تُوَلُّواْ وُجُوهَكُمۡ قِبَلَ ٱلۡمَشۡرِقِ وَٱلۡمَغۡرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلۡبِرَّ مَنۡ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلۡكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ...﴾

"सारी अच्छाई पूरब और पश्चिम की ओर मुँह करने में ही नहीं, बल्कि वास्तव में अच्छा वह व्यक्ति है जो अल्लाह पर, आख़िरत के दिन पर, फरिशतों पर, अल्लाह की किताब पर और नबियों पर ईमान रखता हो।" [सूरा अल-बक़रा : 177] और तकदीर (भाग्य) के विषय में अल्लाह तआला

फ़रमाता है :

﴿إِنَّا كُلَّ شَيۡءٍ خَلَقۡنَٰهُ بِقَدَرٖ ٤٩ وَمَآ أَمۡرُنَآ إِلَّا وَٰحِدَةٞ كَلَمۡحِۭ بِٱلۡبَصَرِ ٥٠﴾

{निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से। और हमारा आदेश बस एक ही बार होता आँख झपकने के समान}। [सूरतुल-क़मर : 49-50]

और रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सुन्नत से यह बात प्रमाणित है कि आपने ईमान के विषय में जिबरील -अलैहिस्सलाम- के प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया :

«الْإِيمَانُ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ: خَيْرِهِ وَشَرِّهِ».

«ईमान यह है की तुम अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, अंतिम दिन तथा भाग्य के अच्छे एवं बुरे होने पर ईमान लाओ»।

***

अल्लाह तआला पर ईमान लाना

अल्लाह पर ईमान लाने में चार चीजें सम्मिलित हैं:

पहली बात: अल्लाह तआला के वजूद (अस्तित्व) पर ईमान रखनाः

अल्लाह तआला के वजूद (अस्तित्व) को फितरत (प्रकृति), बुद्धि, शरीअत और हिस्स (इन्द्रिय-ज्ञान, चेतना) सभी तर्क प्रमाणित करते हैं।

1- अल्लाह के वजूद पर फितरत (प्रकृति) की दलालत (तर्क) यह है कि: प्रत्येक मख़लूक़ (प्राणी वर्ग) बिना किसी पूर्व सोच विचार या शिक्षा के

प्राकृतिक रूप से अपने ख़ालिक़ (जन्मदाता) पर ईमान रखता है, इस प्राकृतिक तकाजे से वही व्यक्ति विमुख हो सकता है जिसके हृदय पर उसके विमुख होने वाला बाहरी प्रभाव अधिकार जमा ले,

«مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يُنَصِّرَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ».

क्योंकि नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- का फ़रमान है: "हर नवजात बच्चा फितरत (प्राकृतिक अवस्था) पर पैदा होता है, परंतु उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई या मजूसी बना देते हैं।"

2- अल्लाह तआला के अस्तित्व पर बुद्धि की दलालत (तर्क) यह है कि: सारे पिछले और आगामी जीव जंतु के लिए ज़रूरी है कि उन का एक उत्पत्तिकर्ता (जन्मदाता) हो जिस ने उनको पैदा किया हो, क्योंकि ऐसा संभव नहीं है कि जीव प्राणी अपने आपको वजूद में लाएं,और यह भी असम्भव है कि वह सहसा पैदा हो जाएं।

कोई प्राणी स्वयं अपने आपको इस लिए पैदा नहीं कर सकता क्योंकि कोई वस्तु अपने आपको स्वयं पैदा नहीं करती है, क्योंकि अपने अस्तित्व से पूर्व वह स्वयं अस्तित्व-हीन थी, फिर सृष्टा (ख़ालिक़) कैसे हो सकती है?!

और यह संयोगवश नहीं हो सकता, क्योंकि हर घटना के लिए एक कारण का होना आवश्यक है, और क्योंकि यह इतने सुंदर प्रणाली, समन्वय, और कारणों और परिणामों के बीच संबंध और प्राणियों के बीच तालमेल पर आधारित है, अतः यह पूरी तरह से असंभव है कि यह संयोगवश हुआ हो, क्योंकि जो चीज़ संयोग से अस्तित्व में आती है, वह अपने मूल अस्तित्व में व्यवस्थित नहीं होती, तो उसकी निरंतरता और विकास में कैसे व्यवस्थित हो

सकती है?

और जब इस प्राणी वर्ग का स्वयं अपने आपको पैदा करना संभव नहीं है, इसी प्रकार इस का सहसा पैदा होना भी असंभव है, तो यह बात निश्चित हो जाती है की उसका कोई उत्पत्तिकर्ता (पैदा करने वाला) और सृष्टा है, और वह अल्लाह रब्बुल आलमीन (सर्वसंसार का पालनहार) है।

अल्लाह तआला ने इस अक़्ली (विवेकी) और निश्चित प्रमाण का वर्णन सूरह तूर में किया है, अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿أَمْ خُلِقُواْ مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ ٱلْخَٰلِقُونَ ﴿٣٥﴾﴾

"क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं उत्पत्तिकर्ता (पैदा करने वाले) हैं"। [सूरा तूर : 35] अर्थातः वे बिना किसी निर्माता के अस्तित्व में नहीं आए हैं, तथा न ही उन्होंने स्वयं को ख़ुद से बनाया है, इसलिए निश्चित रूप से उनका निर्माता कल्याणकारी एवं सर्वोच्च अल्लाह है। तथा इसी कारण जब जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूरह तूर की तिलावत करते हुए सुना और जब आप इन आयतों पर पहुंचे:

﴿أَمْ خُلِقُواْ مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ ٱلْخَٰلِقُونَ ﴿٣٥﴾ أَمْ خَلَقُواْ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ عِندَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ ٱلْمُصَيْطِرُونَ﴿٣٧﴾﴾

{क्या वह पैदा हो गए हैं बिना किसी के पैदा किए, अथवा वह स्वयं पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की? वास्तव में वह विश्वास ही नहीं रखते}। [सूरा तूर : 35-37]

तथा उस समय जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु मुशरिक (बहुदेववादी) थे, उन्होंने

कहा: "मेरा हृदय उड़ने को हो गया, और यही वह प्रथम अवसर था जब मेरे हृदय में ईमान का स्थापन हुआ।"

और चलिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जो इस बात को स्पष्ट करता है: यदि कोई व्यक्ति आपको एक भव्य महल के बारे में बताता है, जिसे बाग-बगीचों ने घेर रखा है, जिसके बीच में नदियाँ प्रवाहित हो रही हैं, और जो फर्नीचर तथा बिस्तरों से भरा हुआ है, और जिसे विभिन्न प्रकार की सजावट से अलंकृत किया गया है, और यदि वह आपसे कहे: यह महल और इसमें जो भी पूर्णता है, उसने स्वयं अपने आप को उत्पन्न किया है, या यह बिना किसी कारण के संयोगवश अस्तित्व में आया है, तो आप तुरंत इसे अस्वीकार कर देंगे और उसे झूठा कहेंगे, और उसकी बातों को मूर्खता समझेंगे। क्या इसके बाद यह संभव है कि यह विशाल ब्रह्मांडः जिसमें धरती, आकाश, तारामंडल, इसकी विभिन्न अवस्थाएँ और शानदार व्यवस्था शामिल हैं, ने स्वयं को उत्पन्न किया हो, या यह संयोगवश बिना किसी कारण के अस्तित्व में आया हो?!

3- जहाँ तक शरीअत द्वारा अल्लाह तआला के अस्तित्व के प्रमाण की बात हैः तो सभी आकाशीय ग्रंथ इसकी पुष्टि करते हैं, और उनके द्वारा लाई गई न्यायपूर्ण विधियाँ, जो सृष्टि के हितों को समाहित करती हैं, इस बात का साक्ष्य हैं कि ये एक ज्ञानी और बुद्धिमान रब (पालनहार) की ओर से हैं, जो अपनी सृष्टि के हितों से भली-भांति परिचित है, तथा इस में जो ब्रह्मांडीय समाचार हैं जिस की सच्चाई को वास्तविकता ने प्रमाणित किया है, यह इस बात का प्रमाण है कि वे एक ऐसे रब की ओर से हैं जो जिन चीज़ों की सूचना देता है, उन्हें अस्तित्व में लाने की क्षमता रखता है।

4- और जहाँ तक अल्लाह के अस्तित्व पर हिस्स (इन्द्रियों) के प्रमाण

की बात है, तो यह दो दृष्टिकोण से है:

प्रथम: हम सुनते हैं और देखते हैं कि प्रार्थना करने वालों की प्रार्थनाओं का उत्तर मिलता है, और संकटग्रस्त लोगों की सहायता की जाती है, जो अल्लाह तआला के अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण है। पवित्र अल्लाह ने फरमाया है:

﴿وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ...﴾

{और नूह को याद करो, जब उन्हों ने इस से पहले प्रार्थना की तो हम ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की}। [सूरा अल-अंबिया : 76] अल्लाह तआला का फ़रमान है: {उस समय को याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे तो अल्लाह ने तुम्हारी सुन ली}। [सूरा अल-अनफ़ाल: 9]

सहीह बुखारी में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि: एक देहाती जुमा के दिन मस्जिद में प्रविष्ट हुआ, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुत्बा (भाषण) दे रहे थे, उन्होंने कहा: हे अल्लाह के रसूल, सम्पत्ति नष्ट हो गई और परिवार के लोग भूख से तड़प रहे हैं, अल्लाह से हमारे लिए दुआ करें। तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ उठाए और दुआ की, तो बादल पहाड़ों जैसे उठ खड़े हुए, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी मिम्बर (मंच) से नीचे भी नहीं उतरे थे कि मैंने बारिश को उनकी दाढ़ी से टपकते हुए देखा।

और दूसरे जुमा को, वही देहाती अथवा कोई और खड़ा हुआ और बोला: हे अल्लाह के रसूल, निर्माण ढह गया है और सम्पत्ति डूब गई है, अल्लाह से हमारे लिए दुआ करें। तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ उठाए और कहा: "अल्लाहुम्मा ह़वालैना वला अलैना" (अल्लाह, हमारे आसपास बारिश कर, हम पर नहीं), तथा आप और सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने जिस दिशा में भी इशारा किया, वहां से बादल हट गए।

आज भी यह बात देखी जाती है और स्वत: सिद्ध है कि सच्चे दिल से अल्लाह की ओर ध्यान मग्न होने वालों और दुआ की स्वीक्रति के शर्तों की पूर्ति करने वालों की प्रार्थना स्वीकार होती है।

द्वितीय दृष्टिकोण: पैग़म्बरों की निशानियां जिसको मोजिज़ात (चमत्कार) के नाम से जाना जाता है, और जिन को लोग देखते हैं या उसके विषय में सुनते हैं, यह मोजिज़ात भी उन पैग़म्बरों को भेजने वाली ज़ात अर्थात अल्लाह तआला के वजूद पर निश्चित और अटल प्रमाण हैं, क्योंकि यह मोजिज़ात मानव जाति की ताक़त की सीमा से बाहर होते हैं, जिनको अल्लाह तआला अपने रसूलों की पुष्टि तथा उनकी सहायता और सहयोग के लिए प्रकट करता है।

इसका एक उदाहरण: मूसा -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की आयत (चमत्कार) है, जब अल्लाह तआला ने उनको आदेश दिया कि समुद्र पर अपनी लाठी मारें, और उन्हों ने लाठी मारी तो समुद्र में बारह सूखे मार्ग बन गए और पानी उनके किनारे पर्वत के समान खड़ा हो गया,अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿فَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضۡرِب بِّعَصَاكَ ٱلۡبَحۡرَۖ فَٱنفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرۡقٖ كَٱلطَّوۡدِ ٱلۡعَظِيمِ ٦٣﴾

"हम ने मूसा की ओर वह्य (ईश्वर वाणी) भेजी कि समुद्र पर अपनी लाठी मारो, तो उसी समय समुद्र फट गया और पानी का प्रत्येक भाग बड़े पर्वत के समान हो गया"। [सूरतुश्- शुअरा : 63]

दूसरा उदाहरण: ईसा अलैहिस्सलाम की आयत (चमत्कार) है, वह

अल्लाह की आज्ञा से मृतकों को जीवित करते थे और उनको उनकी समाधियों से निकाल कर खड़ा कर देते थे, उनके विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

﴿...وَأُحۡيِ ٱلۡمَوۡتَىٰ بِإِذۡنِ ٱللَّهِ...﴾

"और अल्लाह की आज्ञा से मृतकों को जीवित कर देता हूं"। [सूरा आल-ए-इमरान: 49] और कहा :

﴿...وَإِذۡ تُخۡرِجُ ٱلۡمَوۡتَىٰ بِإِذۡنِي...﴾

"और जब तुम मेरी आज्ञा से मृतकों को निकाल खड़ा कर देते थे"। [सूरा अल-माइदा : 110]

तीसरा उदाहरणः हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का (मोजिज़ा -चमत्कार-) है, क़ुरैश ने आप से निशानी (चमत्कार) की माँग की तो आप ने चाँद की ओर इशारा किया जिस से वह दो टुकड़े हो गया, जिसको लोगों ने देखा, इसी का वर्णन करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿ٱقۡتَرَبَتِ ٱلسَّاعَةُ وَٱنشَقَّ ٱلۡقَمَرُ ۝١ وَإِن يَرَوۡاْ ءَايَةٗ يُعۡرِضُواْ وَيَقُولُواْ سِحۡرٞ مُّسۡتَمِرّٞ ۝٢﴾

{समीप आ गई प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद। और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं, और कहते हैंः यह तो जादू है जो होता रहता है}। [सूरतुल-क़मर : 1-2]

यह अनुभव की जाने वाली निशानियां जिनको अल्लाह तअल्ला अपने रसूलों की सहायता और सहयोग के लिए प्रस्तुत करता है, यह अल्लाह तआला के मौजूद होने को निश्चित और अटल रूप से प्रमाणित करती हैं।

द्वितीय मामला जो अल्ला तआला की रुबूबियत पर ईमान लाने को

शामिल है: अल्ला तआला की रुबूबियत पर ईमान लाने का अर्थ इस बात का वचन देना है कि अकेला अल्लाह ही रब (पालनहार और पालनकर्ता) है, उस में कोई उसका साझी एवं सहायक नहीं है।

और रब वह हैः जिसके लिए विशिष्ट हो सृष्टा होना, स्वामी होना और हाकिम (शासक) होना, अतः अल्लाह के अतिरिक्त कोई सृष्टा (ख़ालिक़) नहीं, उसके अतिरिक्त कोई स्वामी नहीं और उसके अतिरिक्त कोई शासक नहीं, सर्वोच्च अल्लाह फरमाता हैः

﴿...أَلَا لَهُ ٱلۡخَلۡقُ وَٱلۡأَمۡرُ...﴾

{याद रखो ! अल्लाह ही के लिए विशेष है सृष्टा होना और हाकिम (शासक) होना}। [सूरा अल-आराफ़ : 54] और कहा :

﴿...ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمۡ لَهُ ٱلۡمُلۡكُۚ وَٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمۡلِكُونَ مِن قِطۡمِيرٍ﴾

"यही अल्लाह तुम सब का रब (प्रभु, पालनहार) है, उसी का राज्य और शासन है, और जिन्हें तुम उसके अतिरिक्त पुकारते हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके पर भी अधिकार नहीं रखते"। [सूरह फ़ातिर : 13]

और यह ज्ञात नहीं है कि किसी भी मख़लूक़ (सृष्टि, रचना) ने अल्लाह की रुबूबियत (रब एवं पालनहार होने) का इंकार किया हो, सिवाय इसके कि वह हठ धर्मी और अपने कहे पर विश्वास न रखने वाला हो, जैसे कि फिरऔन ने अपने समुदाय से कहा थाः

﴿فَقَالَ أَنَا۠ رَبُّكُمُ ٱلۡأَعۡلَىٰ ٢٤﴾

(और कहाः मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ) (सूरह अल-नाज़िआत: 24), और कहा:

﴿...يَـٰٓأَيُّهَا ٱلۡمَلَأُ مَا عَلِمۡتُ لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرِي...﴾

(मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा) (सूरत अल-क़सस: 38), लेकिन यह उसकी आस्था के अनुसार नहीं था, अल्लाह तआला फरमाता है: {तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार एवं अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया}। (सूरह अल-नम्ल: 14)। और मूसा ने फिरऔन से कहा, जैसा कि अल्लाह ने वर्णन किया है:

﴿...لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَآ أَنزَلَ هَـٰٓؤُلَآءِ إِلَّا رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ بَصَآئِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَٰفِرۡعَوۡنُ مَثۡبُورٗا﴾

{तुम्हें निश्चित रूप से पता है कि इन चीजों को भेजने वाला आकाशों और पृथ्वी का रब (प्रभु) ही है, और हे फिरौन, मुझे यकीन है कि तुम तबाही में पड़े हो}। (सूरत अल-इसरा: 102), और यही कारण है कि मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) लोग अल्लाह तआला की उलूहियत (उपासना) में शिर्क करने के उपरान्त उसकी रुबूबियत को स्वीकार करते थे, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है:

﴿قُل لِّمَنِ ٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٨٤ سَيَقُولُونَ لِلَّهِۚ قُلۡ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ٨٥ قُلۡ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبۡعِ وَرَبُّ ٱلۡعَرۡشِ ٱلۡعَظِيمِ ٨٦ سَيَقُولُونَ لِلَّهِۚ قُلۡ أَفَلَا تَتَّقُونَ ٨٧ قُلۡ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيۡءٖ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيۡهِ إِن كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٨٨ سَيَقُولُونَ لِلَّهِۚ قُلۡ فَأَنَّىٰ تُسۡحَرُونَ ٨٩﴾

{(हे नबी!) उन से कहोः किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो? वे कहेंगे कि अल्लाह की, आप कहिएः फिर तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते? आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी? वे कहेंगेः अल्लाह है, आप कहिएः फिर उस से डरते क्यों नहीं हो? आप उन से कहिए कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो? वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं, आप कहिएः फिर तुम पर कहाँ से जादू हो जाता है?}। [सूरा अल-मोमिनून : 84-89]

तथा अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ ٱلْعَزِيزُ ٱلْعَلِيمُ ۝٩﴾

{और यदि आप प्रश्न करें उनसे कि किसने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगेः उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली, सब कुछ जानने वाले ने}। [सूरतुज़-ज़ुख़रुफ़ : 9]

एवं पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝٨٧﴾

{यदि आप उन से पूछें कि उन्हें किसने पैदा किया? तो अवश्य यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने, फिर यह कहाँ उल्टे जा रहे हैं}। [सूरतुज़-ज़ुख़रुफ़ : 87]

और अल्लाह का आदेश शरई और कौनी (धार्मिक तथा ब्रह्माण्डीय) दोनों प्रकार के आदेशों पर व्यापक है, जैसे कि वह ब्रह्मांड का प्रबंधक है और इसमें जो चाहता है, अपनी हिकमत (तत्वदर्शिता) के अनुसार फैसला करता है, वैसे ही वह इसमें इबादत के शरई आदेशों और व्यापारिक नियमों का हाकिम भी है, जो उसकी हिकमत के अनुसार होता है, अतः जो कोई भी

अल्लाह के साथ किसी और को इबादत में विधि-निर्माता, या लेन-देन में हाकिम मानता है, उसने अल्लाह के साथ शिर्क किया और ईमान को सिद्ध नहीं किया।

तृतीय मामला जो अल्लाह तआला की उलूहियत (उपासना) पर ईमान लाने को शामिल है: अल्लाह तआला की उलूहियत पर ईमान लाने का अर्थ इस बात का वचन देना है कि अकेला अल्लाह ही सच्चा पूज्य है, उसका कोई साझी नहीं, "इलाह" का शब्द "मालूह" अथवा "माबूद" के अर्थ में है, अर्थात जिसकी प्रेम और सम्मान तथा प्रतिष्ठा के साथ इबादत की जाए।

अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَإِلَٰهُكُمۡ إِلَٰهٞ وَٰحِدٞۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ ١٦٣﴾

"और तुम्हारा उपास्य एकमात्र उपास्य है; उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, वह दयालु और कृपालु है।" (सूरह अल-बक़रह: 163)।

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلۡعِلۡمِ قَآئِمَۢا بِٱلۡقِسۡطِۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ١٨﴾

तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: (अल्लाह साक्षी है, जो न्याय के साथ क़ायम है कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है)। (सूरह आले इमरानः 18)। अल्लाह के साथ जिस चीज़ को भी पूज्य ठहराकर उसके अतिरिक्त उसकी इबादत की जाएगी, तो उसकी उलूहियत (उपासना) असत्य है, अल्लाह तआला फरमाता है:

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلۡحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ هُوَ ٱلۡبَٰطِلُ وَأَنَّ

ٱللَّهَ هُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

{यह सब इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है और उसके अतिरिक्त जिसे भी यह पुकारते हैं वह असत्य है, नि:सन्देह अल्लाह ही सर्वोच्च और महान है}। (सूरह ह़ज्जः 62)। अल्लाह के अतिरिक्त असत्य पूजा पात्रों का नाम पूज्य (माबूद) रख लेने से उन्हें उलूहियत (उपासना) का अधिकार नहीं प्राप्त हो जाता, चुनाँचे अल्लाह तआला ने "लात", "उज्जा" और "मनात" के विषय में फ़रमाया:

﴿إِنۡ هِيَ إِلَّآ أَسۡمَآءٌ سَمَّيۡتُمُوهَآ أَنتُمۡ وَءَابَآؤُكُم مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلۡطَٰنٍ...﴾

{वास्तव में यह केवल नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उनका कोई प्रमाण नहीं उतारा}। [सूरा अल-नज्म : 23]

तथा हूद अलैहिस्सलाम के संबंध में फरमाया कि उन्होंने अपने समुदाय के लोगों से कहाः

﴿...أَتُجَٰدِلُونَنِي فِيٓ أَسۡمَآءٖ سَمَّيۡتُمُوهَآ أَنتُمۡ وَءَابَآؤُكُم مَّا نَزَّلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلۡطَٰنٍ...﴾

{क्या तुम मुझसे कुछ (मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो, जिनका तुमने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रखा है, जिसका कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है?} [सूरा अल-आ'राफ़: 191]

और यूसुफ अलैहिस्सलाम के विषय में फ़रमाया कि उन्होंने अपने जेल के साथियों से कहा:

﴿يَٰصَٰحِبَيِ ٱلسِّجۡنِ ءَأَرۡبَابٞ مُّتَفَرِّقُونَ خَيۡرٌ أَمِ ٱللَّهُ ٱلۡوَٰحِدُ ٱلۡقَهَّارُ

مَا تَعۡبُدُونَ مِن دُونِهِۦٓ إِلَّآ أَسۡمَآءٗ سَمَّيۡتُمُوهَآ أَنتُمۡ وَءَابَآؤُكُم مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلۡطَٰنٍ...﴾

{हे मेरे क़ैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम हैं, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह?। तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबाद (वंदना) करते हो वह केवल नाम है, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उस का कोई प्रमाण नहीं उतारा है}। [सूरह यूसुफ़ः 30-40]

इसी लिए समस्त पैग़म्बर -अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम- अपनी-अपनी क़ौम से यही कहते थे:

﴿...ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرُهُۥ...﴾

"तुम अल्लाह की उपासना करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं है"। [सूरा अल-आराफ़: 59] किन्तु मुश्रिकों ने उस आमंत्रण को अस्वीकार कर दिया और अल्लाह के अतिरिक्त उन्होंने पूजा पात्र बना लिए, जिनकी वह पवित्र अल्लाह के साथ पूजा करते, उनसे सहायता मांगते और उन से फरियाद करते थे।

अल्लाह तआला ने मुश्रिकों के अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को पूजा पात्र बनाने को दो अक़ली (बौद्धिक) प्रमाणों से असत्य घोषित किया है:

प्रथमः यह कि मुश्रिकों ने जिनको पूज्य बनाया है उनके अन्दर उलूहियत (पूज्य होने) की कोई भी विशेषता नहीं पाई जाती, यह स्वयं पैदा किए गए हैं, कुछ भी पैदा नहीं कर सकते, और ना ही अपने पूजने वालों को कोई लाभ पहुंचा सकते हैं, ना उनसे कोई हानि टाल सकते हैं, ना उनके लिए जीवन और मृत्यु का अधिकार रखते हैं, और ना ही आकाशों में किसी चीज़ के मालिक या उसके भागीदार हैं।

"उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे पूजा पात्र बना रखे हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह स्वयं पैदा किए हुए हैं, यह तो अपने प्राण के लिए हानि और लाभ का भी अधिकार नहीं रखते, और ना मृत्यु और जीवन के, और ना पुनः जीवित होने के वह मालिक हैं"। [सूरह फ़ुर्क़ानः 3]।

तथा सर्वोच्च अल्लाह का फरमान हैः

﴿قُلِ ٱدۡعُواْ ٱلَّذِينَ زَعَمۡتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَمۡلِكُونَ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا لَهُمۡ فِيهِمَا مِن شِرۡكٖ وَمَا لَهُۥ مِنۡهُم مِّن ظَهِيرٖ وَلَا تَنفَعُ ٱلشَّفَٰعَةُ عِندَهُۥٓ إِلَّا لِمَنۡ أَذِنَ لَهُۥ...﴾

(आप कह दीजिए ! अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है सब को पुकार लो। न उनमें से किसी को आकाशों तथा धरती में से एक कण का अधिकार है, न उनका उनमें कोई भाग है और न उनमें से कोई अल्लाह का सहायक है। और उसके यहाँ कोई भी अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु उस व्यक्ति को जिसके लिए वह अनुमति दे।) [सूरह सबाः 22-23]।

﴿أَيُشۡرِكُونَ مَا لَا يَخۡلُقُ شَيۡـٔٗا وَهُمۡ يُخۡلَقُونَ ١٩١ وَلَا يَسۡتَطِيعُونَ لَهُمۡ نَصۡرٗا وَلَآ أَنفُسَهُمۡ يَنصُرُونَ ١٩٢﴾

और अल्लाह तआला का कथन हैः {क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और वह स्वयं पैदा किए हुए हैं? तथा न उन की सहायता कर सकते हैं, और न अपनी सहायता कर सकते हैं?}। [सूरह आराफ़ः 191-192]।

और जब इन पूजा पात्रों की यह दशा है तो इनको पूज्य बनाना अति मूर्खता और बड़ा बेकार काम है।

द्वितीयः यह मुश्रिक इस बात को स्वीकार करते थे कि अल्लाह तआला ही अकेला पालनहार और सृष्टा है जिसके हाथ में प्रत्येक चीज़ का अधिकार और प्रभुत्व है, वही शरण देता है उसके विरुद्ध कोई शरण नहीं दे सकता, यह सब इस बात को अनिवार्य कर देता है कि जिस प्रकार वह अल्लाह तआला की रुबूबियत (सृष्टा, उत्पत्तिकर्ता और स्वामी आदि होने) में वहदानियत (एकता) को स्वीकार करते हैं, उसी प्रकार उलूहियत (एक मात्र पूज्य होने) में भी अल्लाह की वहदानियत को स्वीकार करें,

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ٢١ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٢٢﴾

जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः {हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव है। जिस ने धरती को तुम्हारे लिए बिछौना तथा गगन को छत बनाया, और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिए प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाए, अतः जानते हुए भी उस के साझी न बनाओ)}। [सूरह बक़रहः 21-22].

तथा अल्लाह तआला का कथन हैः {और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किसने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं}। [सूरह ज़ुख़्रुफ़ः 87]।

{(हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियां किस के अधिकार में हैं? कौन

निर्जीव से जीव को तथा जीव से निर्जीव निकालता है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह, फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?। तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराए जा रहे हो}। [सूरह यूनुसः 31-32]।

चतुर्थ मामला जो अल्लाह तआला पर ईमान लाने को सम्मिलित हैः वह अल्लाह के अस्मा व सिफ़ात (नामों और गुणों) पर ईमान लाना हैः

अर्थात: अल्लाह ने अपने लिए अपनी किताब में या अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत में जो नाम और गुण अपने लिए निर्धारित किए हैं, उन्हें उसी प्रकार स्वीकार करना चाहिए जैसे वे हैं, बिना किसी परिवर्तन, विरूपण, क़ैफ़ियत या तुलना के, अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ وَذَرُواْ ٱلَّذِينَ يُلۡحِدُونَ فِيٓ أَسۡمَٰٓئِهِۦۚ سَيُجۡزَوۡنَ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٨٠﴾

"और अल्लाह के सबसे अच्छे नाम हैं, तो तुम उससे इन्हीं नामों के द्वारा प्रार्थना करो और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों में दोषारोपण करते हैं। वे अपने कर्मों का फल पाएंगे।" (सूरह अल-अराफ: 180)।

وقال تعالى: ﴿...وَلَهُ ٱلۡمَثَلُ ٱلۡأَعۡلَىٰ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾ وقال تعالى: ﴿...لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

अल्लाह तआला फरमाता हैः (और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, तथा वही प्रभुत्व शाली तत्वज्ञ है)। [सूरह रूमः 27]

अल्लाह का कथन है: (उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है)। (सूरह अश्-शूरा : 11)

इस विषय में दो सम्प्रदाय पथ-भ्रष्ट (गुमराह) हो गए हैं:

पहला सम्प्रदाय: (मुअत्तिला) का है, जिन्होंने अल्लाह के अस्मा व सिफ़ात या उन में से कुछ को अस्वीकार किया है, उनका विचार यह है कि अल्लाह के लिए अस्मा व सिफ़ात प्रमाणित करने से (सदृश्य और समानता) लाज़िम आती है, अर्थात अल्लाह को मख़्लूक़ (सृष्टि) के सदृश्य और समान कर देना लाज़िम आता है, किन्तु उनका यह भ्रम (विचारधारा) कई कारणों से असत्य है, जिन में से कुछ निम्नलिखित हैं:

पहला: यह गलत परिणामों की ओर ले जाता है, जैसे कि अल्लाह के कथनों में विरोधाभास, क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने लिए नाम और गुण (अस्मा व सिफात) साबित किए हैं, और यह भी कहा है कि उसके जैसी कोई चीज़ नहीं है, और यदि उन्हें साबित करने का अर्थ तुलना करना होता, तो अल्लाह के शब्दों में विरोधाभास उत्पन्न होता और कुछ हिस्सों का कुछ अन्य हिस्सों से खंडन होता।

दूसरा: यह आवश्यक नहीं है कि दो चीजें यदि एक जैसे नाम या गुण वाले हों तो वे एक समान ही हैं। उदाहरण के लिए, आप देखते हैं कि दो व्यक्ति इस बात में एक जैसे हो सकते हैं कि दोनों इंसान हैं, सुनने वाले हैं, देखने वाले हैं, बोलने वाले हैं, किंतु इसका कदापि यह अर्थ नहीं है कि वे दोनों मानवीय अर्थों में, सुनने में, देखने में, और बोलने में एक समान होंगे।

तथा आप देखते हैं कि जानवरों के पास हाथ, पैर, और आँखें होती हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उन सभों के हाथ, पैर, और आँखें एक समान होती हैं।

जब अस्मा व सिफ़ात (नामों और गुणों) में समान होने के विषय में मख़्लूक़ात (सृष्टि) के बीच में इतना अन्तर और मतभेद है, तो ख़ालिक़ और मख़्लूक़ (सृष्टिकर्ता एवं सृष्टि) के बीच में कहीं अधिक और प्रत्यक्ष अन्तर और भेद होगा।

दूसरा सम्प्रदाय : (मुशब्बिहा) का है, जिन्होंने अल्लाह तआला के लिए अस्मा व सिफ़ात को साबित माना, किन्तु अल्लाह तआला को उसके मख़्लूक़ के समान और बराबर करार दिया, उनका विचार यह है कि (किताब व सुन्नत के) नुसूस (पाठ) की दलालत का यही तकाज़ा (मांग) है, क्यों कि अल्लाह तआला बन्दों को उसी चीज के द्वारा संबोधित करता है जिसे वह समझ सकें, यह विचार धारा भी कई कारणों से असत्य है, जिन में से कुछ कारण निम्नलिखित हैं :

प्रथम कारण: यह है कि अल्लाह तआला को उसके मख़्लूक़ के समान करार देना असत्य है, जिसका बुद्धि और शरीअत दोनों हीं खंडन करते हैं, और यह असंभव है कि किताब व सुन्नत के नुसूस (पाठ) की मांग कोई असत्य चीज हो।

दूसरा कारणः यह है कि अल्लाह तआला ने बन्दों को उसी चीज़ के द्वारा संबोधित किया है जिसे वह मूल अर्थ के एतबार से समझ सकें, किन्तु जहाँ तक उसकी ज़ात और गुणों से संबंधित अर्थों की वास्तविकता और यथार्थता का संबंध है तो इसके ज्ञान को अल्लाह तआला ने अपने साथ विशेष कर रखा है।

जब अल्लाह तआला ने अपने लिए यह सिद्ध किया है कि वह 'समीअ' अर्थात सुनने वाला है तो सम्अ् (सुनने का मूल अर्थ) ज्ञात है, (और वह है आवाज़ -स्वर- का जानना), किन्तु अल्लाह तआला के लिए उस सुनने की

वास्तविकता मालूम नहीं है क्योंकि सुनने की वास्तविकता मख़्लूक़ात में भी भिन्न होती है, तो ख़ालिक़ और मख़्लूक़ के मध्य यह भिन्नता और अंतर अधिक स्पष्ट और महान होगी।

और जब अल्लाह तआला अपने बारे में यह बताता है कि वह अपने अर्श पर मुस्तवी (सिंहासन पर स्थिर) है, तो उस इस्तिवा (स्थिरता) का मूल अर्थ तो ज्ञात है, किंतु अल्लाह की अर्श पर मुस्तवी होने की वास्तविकता हमारे लिए ज्ञात नहीं है, क्योंकि मुस्तवी होने की वास्तविकता प्राणियों के संदर्भ में भिन्न होती है, तो किसी स्थिर कुर्सी पर मुस्तवी होना, किसी कठिन और अवज्ञाकारी ऊंट की पीठ पर मुस्तवी होने के जैसा नहीं है, जब यह प्राणियों के संदर्भ में भिन्न होता है, तो यह अंतर खालिक और मखलूक (रचना एवं रचनाकार) के संदर्भ में और भी स्पष्ट और महान है।

अल्लाह तआला पर जैसा कि हमने बताया है, विश्वास करने से मोमिनों को कई महत्वपूर्ण लाभ होते हैं, जिनमें से कुछ ये हैं:

पहला: अल्लाह की तौहीद को इस प्रकार को सिद्ध करना कि उसके पश्चात बंदा आशा और भय में अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से संबंध ना रखे, और ना ही अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना करे।

दूसरा: अल्लाह तआला से पूर्ण प्रेम और उसके महान नामों और सर्वोच्च गुणों के अनुसार उसका आदर करना।

तीसराः अल्लाह तआला की पूर्ण रूप से इबादत, वह इस प्रकार कि बंदा अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करे और उसकी मना की हुई चीज़ों से बचे।

***

फ़रिश्तों पर ईमान

फ़रिश्ते: एक अदृश्य दुनिया के निवासी हैं, जो अल्लाह तआला के आज्ञाकारी उपासक हैं और जिनमें रब और देवत्व की विशेषताएँ नहीं हैं। अल्लाह तआला ने उन्हें नूर (प्रकाश) से उत्पन्न किया है और उन्हें अपने आदेश के पालन के लिए पूर्ण आत्मसमर्पण और उसे लागू करने की शक्ति दी। अल्लाह तआला ने फरमाया: (और जो फरिश्ते उसके पास हैं, वे उसकी इबादत से अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं। वे रात और दिन उसकी पवित्रता का गान करते हैं तथा आलस्य नहीं करते)। (सूरत अल-अंबिया: 19-20)।

फ़रिश्तों की संख्या अत्याधिक है, अल्लाह तआला के सिवी कोई उन को गिन नहीं सकता, सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में अनस -रज़ियल्लाहू अन्हु- की हदीस में मेराज की घटना के संदर्भ में प्रमाणित है कि नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को आकाश में बैतुल मामूर दिखाया गया जिस में प्रति दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं, और जब उस से बाहर आते हैं तो फिर पुनः उस में जाने की उनकी बारी नहीं आती।

फ़रिश्तों पर ईमान लाने में चार चीजें सम्मिलित हैं:

पहला: उनके अस्तित्व पर ईमान लाना।

दूसराः उन में से जिन के नाम हमें ज्ञात हैं (उदाहरणतः जिब्रील -अलैहिस्सलाम-) उनपर उनके नाम के साथ ईमान लाना, और जिन के नाम ज्ञात नहीं हैं उन पर संक्षिप्त रूप से ईमान रखना।

तीसराः उनकी जिन विशेषताओं को हम जानते हैं उन पर ईमान लाना, (उदाहरण स्वरूप जिबरील -अलैहिस्सलाम-) की विशेषता के विषय में नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सूचना दी है कि आप ने उनको उन की उस आकृति (रूप) में देखा है जिस पर उनकी रचना हुई है, उस समय उनके छः सौ पंख थे, जो क्षितिज (उफ़ुक़) पर छाए हुए थे।

फ़रिश्ता कभी-कभी अल्लाह के आदेश से मानव का आकार भी धारण कर सकता है,

كَمَا حَصَلَ (لِجِبْرِيلَ) حِينَ أَرْسَلَهُ اللهُ تَعَالَى إِلَى مَرْيَمَ فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا، وَحِينَ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ جَالِسٌ فِي أَصْحَابِهِ، جَاءَهُ بِصِفَةِ رَجُلٍ شَدِيدِ بَيَاضِ الثِّيَابِ، شَدِيدِ سَوَادِ الشَّعْرِ، لَا يُرَى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا يَعْرِفُهُ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَجَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلَى فَخِذَيْهِ، وَسَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْإِسْلَامِ، وَالْإِيمَانِ، وَالْإِحْسَانِ، وَالسَّاعَةِ، وَأَمَارَاتِهَا؛ فَأَجَابَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَانْطَلَقَ، ثُمَّ قَالَ ﷺ: «هَذَا جِبْرِيلُ؛ أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِينَكُمْ».

जैसा कि (जिब्रील -अलैहिस्सलाम- के साथ) पेश आया, जब अल्लाह तआला ने उन्हें मरियम के पास भेजा तो वह उनके सामने समूचित मनुष्य के आकार में उपस्थित हुए, और जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा (साथियों) के बीच बैठे हुए थे तो यही जिब्रील आप के पास एक एसे व्यक्ति के रूप में आए जिसके कपड़े अत्यंत सफेद और बाल अत्यंत काले थे, उन पर यात्रा के चिन्ह भी प्रकट नहीं हो रहे थे और सहाबा में से कोई उन

से परिचित भी नहीं था, वह आकर बैठ गए और अपने दोनों घुटनों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घुटने से लगा लिए और अपने दोनों हाथ आप की रानों पर रख दिए, और आप से इस्लाम, ईमान, एहसान और क़यामत तथा उसके प्रमाणों (चिन्हों) के विषय में प्रश्न किए और आप ने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया, फिर वह चले गए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यह जिब्रील थे जो तुम को तुम्हारा धर्म सिखलाने आए थे।

इसी प्रकार जिन फ़रिश्तों को अल्लाह तआला ने इब्राहीम और लूत -अलैहिमुस्सलाम- के पास भेजा वह भी मानव रूप में थे।

चौथा जो फ़रिश्तों पर ईमान लाने से संबंधित है, वह यह किः अल्लाह तआला के आदेश से फ़रिश्ते जो कार्य करते हैं उन में से जिन कार्यों का हम को ज्ञान है उन पर ईमान लाना, उदाहरण स्वरूप (फ़रिश्तों का) अल्लाह तआला की (पवित्रता) बयान करना और किसी उदासीनता और आलस्य के बिना, रात-दिन उसकी उपासना में लगे रहना।

कुछ फ़रिश्तों के विशेष कार्य होते हैं।

उदाहरण स्वरूपः विश्वसनीय जिब्रील -अलैहिस्सलाम-, अल्लाह तआला की वह्य (प्रकाशना) पहुँचाने के लिए नियुक्त हैं, अल्लाह उन्हें वह्य दे कर अपने नबियों व रसूलों के पास भेजता है।

तथा जैसेः मीकाईल, जो बारिश एवं पौधों के प्रभारी हैं।

इसी प्रकारः इस्राफील -अलैहिस्सलाम-, क़यामत के समय और मख्लूक़ के पुनर्जीवन के समय सूर फूंकने पर नियुक्त हैं।

तथा एक मलक उल मौत हैं, जिन्हें मृत्यु के समय प्राण निकालने का काम सौंपा गया है।

और जैसे: मालिक, जो आग (जहन्नम) के प्रभारी हैं, तथा वह आग के संरक्षक हैं।

इसी प्रकार गर्भाशय (माँ के पेट) में गर्भस्थ पर नियुक्त फ़रिश्ते हैं, जब माँ के पेट में शिशु चार महीने का हो जाता है तो अल्लाह तआला उसके पास एक फ़रिश्ता भेजता है और उसकी जीविका, उसके जीवन की अवधि, उसका कर्म और उसके भाग्यशाली अथवा अभागा होने के विषय में लिखने का आदेश देता है।

इसी प्रकारः मनुष्यों के कर्मों को लिखने और उसका संरक्षण करने पर नियुक्त फ़रिश्ते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के पास इस कार्य के लिए दो फ़रिश्ते हैं, एक दाहिने ओर और दूसरा बाएं ओर।

तथाः मुर्दे से प्रश्न करने के लिए नियुक्त फ़रिश्ते हैं, मुर्दा जब क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं जो उस से उसके रब (स्वामी), उसके धर्म और उसके नबी के विषय में प्रश्न करते हैं।

फ़रिश्तों पर ईमान लाने से कई महत्वपूर्ण लाभ होते हैं, जिनमें से कुछ ये हैं:

पहलाः इस से अल्लाह तआला की महानता, शक्ति और सत्ता का ज्ञान प्राप्त होता है, क्योंकि सृष्टि की महानता उसके रचयिता की महानता को प्रमाणित करती है।

दूसराः मनुष्यों पर अल्लाह तआला की कृपा और नेमत का आभारी होने का अवसर प्राप्त होता है, कि उस ने मनुष्य की सुरक्षा करने और उनके कर्मों का लेख तैयार करने तथा उनके अन्य हितों और भलाइयों के लिए फ़रिश्ते नियुक्त किए हैं।

तीसराः फ़रिश्तों के निरंतर अल्लाह तआला की उपासना में लगे रहने पर

उन से प्रेम उत्पन्न होता है।

कुछ पथ भ्रष्ट और भटके हुए लोगों ने फ़रिश्तों के शारीरिक अस्तित्व को अस्वीकार किया है, वह कहते हैं कि फ़रिश्तों से तात्पर्य मनुष्यों के भीतर भलाई की गुप्त शक्ति है, किन्तु यह अल्लाह की पुस्तक और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत तथा मुसलमानों के इजमाअ् (मतैक्य) का खंडन है।

अल्लाह तआला ने फरमाया::

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ جَاعِلِ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُوْلِيٓ أَجۡنِحَةٖ مَّثۡنَىٰ وَثُلَٰثَ وَرُبَٰعَ...﴾

(सब प्रशंसा अल्लाह के लिए हैं जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का, (और) बनाने वाला है संदेशवाहक फ़रिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार-चार परों वाला)। [सूरह फ़ातिरः 1]।

तथा अल्लाह तआला का कथन है:

﴿وَلَوۡ تَرَىٰٓ إِذۡ يَتَوَفَّى ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ يَضۡرِبُونَ وُجُوهَهُمۡ وَأَدۡبَٰرَهُمۡ...﴾

(क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फ़रिश्ते (बधित) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे)। [सूरह अन्फ़ालः 50]।

तथा अल्लाह का फ़रमान है:

﴿...وَلَوۡ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِي غَمَرَٰتِ ٱلۡمَوۡتِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓاْ

أَيۡدِيهِمۡ أَخۡرِجُوٓاْ أَنفُسَكُمُ...﴾

(और आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फ़रिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाए (कहते हैं:) अपने प्राण निकालो)। [सूरह अन्आम: 93]।

तथा फ़रमाया:

﴿...حَتَّىٰٓ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمۡ قَالُواْ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمۡۖ قَالُواْ ٱلۡحَقَّۖ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡكَبِيرُ﴾

(यहां तक कि जब उन (फ़रिश्तों) के हृदयों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं कि तुम्हारे रब (पालनहार) ने क्या फ़रमाया? उत्तर देते हैं कि सच फ़रमाया, और वह सर्वोच्च और महान है)। [सूरह सबा]।

तथा स्वर्गवासियों के बारे में फ़रमाया:

﴿...وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ يَدۡخُلُونَ عَلَيۡهِم مِّن كُلِّ بَابٖ سَلَٰمٌ عَلَيۡكُم بِمَا صَبَرۡتُمۡۚ فَنِعۡمَ عُقۡبَى ٱلدَّارِ﴾

(तथा फ़रिश्ते उन के पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत के लिए) प्रवेश करेंगे। (वे कहेंगे:) तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर)। [सूरह रअ्द: 23-24]।

तथा सही बुख़ारी में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि आपने फरमाया, जब अल्लाह बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम को आवाज़ देता है कि अल्लाह तआला अमुक आदमी को दोस्त रखता है । लिहाज़ा तुम भी उसको दोस्त रखो तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम उसको दोस्त रखते हैं

। फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम तमाम आसमान वालों में ऐलान करते हैं कि अल्लाह तआला फलां आदमी से मुहब्बत रखता है, लिहाज़ा तुम भी उससे मुहब्बत रखो। चुनांचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखते हैं। फिर ज़मीन में भी उसकी मक़बूलियत रख दी जाती है।

इस विषय में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से भी वर्णित है, वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

«إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ كَانَ عَلَى كُلِّ بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلَائِكَةُ يَكْتُبُونَ الْأَوَّلَ فَالْأَوَّلَ، فَإِذَا جَلَسَ الْإِمَامُ طَوَوْا الصُّحُفَ وَجَاءُوا يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ».

"जब जुमुआ का दिन होता है तो मस्जिद के प्रत्येक द्वार पर फ़रिश्ते बैठ जाते हैं, जो पहले आने वालों के नाम लिखते हैं, फिर जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता है तो वह रजिस्टर बंद कर देते हैं और खुत्बा (भाषण) सुनने में व्यस्त हो जाते हैं"।

यह नुसूस (आयतें और हदीसें) इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि फ़रिश्तों का शारीरिक अस्तित्व है, वह कोई निराकार शक्ति नहीं हैं, जैसा कि कुछ पथ भ्रष्ट लोगों का मानना है, और इन्हीं स्पष्ट नुसूस के आधार पर मुसलमानों का इस विषय पर इजमाअ (मतैक्य) है।

***

ग्रंथों पर ईमान लाना

(कुतुब) बहुवचन है (किताब) का और (मक्तूब) के अर्थ में है, अर्थात लिखी हुई वस्तु।

यहां पर पुस्तकों से अभिप्राय वह आसमानी पुस्तकें हैं जिन को

अल्लाह तआला ने मनुष्यों पर अनुकम्पा (रहमत) और उनके मार्गदर्शन के लिए अपने रसूलों (संदेशवाहकों) पर उतारा है, ताकि इनके द्वारा वह लोक और परलोक में कल्याण (सौभाग्य) प्राप्त करें।

ग्रंथों पर ईमान लाने में चार चीज़ें सम्मिलित हैं :

प्रथमः इस बात पर ईमान लाना कि वह पुस्तकें वास्तव में अल्लाह की ओर से अवतरित हुई हैं।

द्वितीयः उन किताबों पर ईमान रखना जिनके नाम हमें ज्ञात हैं: जैसे कि क़ुरआन जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल किया गया और तौरेत जो मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया गया। और इंजील जो ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया गया। और ज़बूर जो दाऊद अलैहिस्सलाम को दिया गया था। तथा जिन पुस्तकों का नाम हमें ज्ञात नहीं है, हम उन पर संक्षिप्त रूप से ईमान लाते हैं।

तृतीयः उन पुस्तकोंं की सही (सत्य एवं शुद्ध) सूचनाओं की पुष्टि करना, जैसा कि क़ुरआन की (सारी) सूचनाएं तथा पिछली पुस्तकोंं की परिवर्तन और हेर-फेर से सुरक्षित सूचनाएं।

चतुर्थः उन पुस्तकोंं में से जो आदेश निरस्त (मन्सूख़) नहीं किए गए हैं उन पर अमल करना और उन्हें प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लेना, चाहे उनकी हिक्मत (तत्वज्ञान) हमारी समझ में आए या न आए, पिछली समस्त आसमानी पुस्तकें महान क़ुरआन के द्वारा निरस्त हो चुकी हैं,

﴿وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَمُهَيۡمِنًا عَلَيۡهِ...﴾

अल्लाह तआला का फ़रमान है: (तथा हमने आप की ओर सत्य पर

आधारित पुस्तक (क़ुरआन) उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है)। [सूरह माइदाः 48] (मुहैमिननन अर्थात संरक्षक का अर्थ है ह़ाकिम अर्थात निर्णय सुनाने वाला)।

इस आधार परः पिछली आसमानी पुस्तकों में जो आदेश हैं उन में से केवल उसी पर अमल करना वैध (जाईज़) है जो सही हो और क़ुरआन करीम ने उसको स्वीकार किया हो।

अल्लाह द्वारा अवतरित पुस्तकों पर ईमान लाने के बहुत बड़े लाभ हैं, जिन में से कुछ यह हैं:

पहलाः बन्दों पर अल्लाह तआला की कृपा और अनुकम्पा का ज्ञान होता है कि उस ने प्रत्येक उम्मत के लिए पुस्तक अवतरित की ताकि उसके द्वारा उन्हें मार्ग दर्शन प्रदान करे।

दूसरा: अल्लाह तआला की शरीअत में हिकमत (बुद्धिमत्ता) का ज्ञान, क्योंकि उसने हर क़ौम के लिए उनकी स्थिति के अनुसार शरई (धार्मिक) कानून बनाए हैं,

﴿...لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا...﴾

जैसाकि सर्वोच्च अल्लाह का कथन हैः (हम ने तुम में से प्रत्येक के लिए एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया)। [सूरह माइदाः 48]

तीसराः इस विषय में अल्लाह तआला की अनुकम्पा का आभारी (शुक्रगुज़ार) होना।

***

संदेष्टाओं (रसूलों) पर ईमान

रुसुलः बहुवचन है (रसूल) का और (मुरसल) के अर्थ में है, अर्थात वह व्यक्ति जिसे किसी चीज़ को पहुंचाने के लिए भेजा गया हो।

इस स्थान पर रसूल से अभिप्रायः वह मनुष्य है जिस पर शरीअत की वह्य (प्रकाशना) की गयी हो और उन्हें उसके प्रसार का आदेश दिया गया हो।

सबसे पहले रसूल नूह अलैहिस्सलाम और सब से अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

अल्लाह तआला का कथन है:

﴿إِنَّآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ كَمَآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ نُوحٖ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعۡدِهِۦ...﴾

(हमने आपकी ओर उसी प्रकार वह्य भेजी, जिस प्रकार नूह एवं उनके बाद के नबियों के पस भेजी थी)। [सूरह अन्-निसा : 163]

तथा सहीह बुख़ारी में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित शफ़ाअत की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

«ذُكِرَ أَنَّ النَّاسَ يَأْتُونَ إِلَى آدَمَ؛ لِيَشْفَعَ لَهُمْ، فَيَعْتَذِرُ إِلَيْهِمْ وَيَقُولُ: ائْتُوا نُوحًا أَوَّلَ رَسُولٍ بَعَثَهُ اللهُ».

"उल्लेख किया कि लोग (प्रलय के दिन) आदम अलैहिस्सलाम के पास आएंगे ताकि वह उनकी सिफारिश (अनुशंसा) करें, तो वह विवशता प्रकट कर देंगे और कहेंगे कि नूह अलैहिस्सलाम के पास जाओ जो अल्लाह के सर्व प्रथम रसूल हैं"। तथा आपने पूरी हदीस का वर्णन किया।

और अल्लाह तआला ने हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में फ़रमाया:

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٖ مِّن رِّجَالِكُمۡ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ...﴾

(मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के

संदेष्टा (रसूल) तथा समस्त नबियों में अन्तिम हैं)। [सूरह अल्-अहज़ाब : 40]

कोई भी समुदाय (उम्मत) रसूल से ख़ाली नहीं रहा, अल्लाह तआला ने उसकी ओर या तो स्थायी शरीअत दे कर कोई रसूल भेजा, या पूर्व शरीअत के साथ किसी नबी को भेजा ताकि वह उसका नवीनीकरण (तजदीद) करे, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِي كُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولًا أَنِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱجۡتَنِبُواْ ٱلطَّٰغُوتَ...﴾

(और हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो और ताग़ूत (असुरों - अल्लाह के सिवा पूज्यों) से बचो)। [सूरह नह़्लः 36]

तथा अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿...وَإِن مِّنۡ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٞ﴾

(और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो)। [सूरह फ़ातिरः 24]

तथा एक स्थान पर अल्लाह कहता हैः

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَا ٱلتَّوۡرَىٰةَ فِيهَا هُدٗى وَنُورٞۚ يَحۡكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسۡلَمُواْ لِلَّذِينَ هَادُواْ...﴾

(हम ने तौरात नाज़िल किया है जिस में मार्ग दर्शन और प्रकाश है, यहूदियों में इसी तौरात के द्वारा अल्लाह के मानने वाले अंबिया (अल्लाह वाले और ज्ञानी) निर्णय करते थे उन के लिए जो यहूदी थे)। [सूरह माइदाः 44]

रसूल मानव और मख़्लूक़ होते हैं, रुबूबियत और उलूहियत की विशेषताओं में से उन्हें किसी भी चीज़ का अधिकार नहीं होता, अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में, जो समस्त रसूलों के नायक और अल्लाह के निकट सबसे महान पद वाले हैं, फ़रमाया:

﴿قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُۚ وَلَوۡ كُنتُ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ لَٱسۡتَكۡثَرۡتُ مِنَ ٱلۡخَيۡرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُۚ إِنۡ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٞ وَبَشِيرٞ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ١٨٨﴾

आप कह दीजिए कि मैं स्वयं अपने नफ्स (आप) के लिए किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता और ना किसी हानि का, परन्तु उतना ही जितना अल्लाह ने चाहा हो, और यदि मैं परोक्ष की बातें जानता होता तो बहुत से लाभ प्राप्त कर लेता और मुझ को कोई हानि ना पहुँचती, मैं तो केवल डराने वाला और शुभ सूचना देने वाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। [सूरह आराफ़ः 188]

तथा अल्लाह तआला का कथन है:

﴿قُلۡ إِنِّي لَآ أَمۡلِكُ لَكُمۡ ضَرّٗا وَلَا رَشَدٗا ٢١ قُلۡ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٞ وَلَنۡ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلۡتَحَدًا ٢٢﴾

(आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिए किसी हानि का न सीधी राह पर लगा देने का। आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं बचा सकेगा अल्लाह अल्लाह से कोई, और न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई शरणागार (बचने का स्थान))। [सूरह जिन्नः 21-22]

रसूलों को मानवीय विशेषताओं का अनुभव करना पड़ता है: जैसे बीमारी, मृत्यु और खान-पान की आवश्यकता आदि, अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के विषय में फ़रमाया कि उन्हों ने अपने रब के गुणों का वर्णन करते हुए कहा:

﴿وَٱلَّذِى هُوَ يُطۡعِمُنِى وَيَسۡقِينِ ٧٩ وَإِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِينِ ٨٠ وَٱلَّذِى يُمِيتُنِى ثُمَّ يُحۡيِينِ ٨١﴾

(और जो (अल्लाह) मुझे खिलाता और पिलाता है। और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है। तथी वही मुझे मारेगा फिर मुझे जीवित करेगा।) [सूरह शोअराः 79-81]

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "मैं तुम जैसा एक इंसान हूं, मैं भी भूल जाता हूं जैसे तुम भूलते हो, इसलिए जब मैं भूल जाऊं, तो मुझे याद दिला दो।"

अल्लाह तआला ने उन्हें उनकी उच्चतम स्थिति में अपनी बंदगी के साथ वर्णित किया है, तथा ऐसा उनकी प्रशंसा के संदर्भ में किया है, तथा सर्वोच्च अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम के संबंध में कहा है:

﴿...إِنَّهُۥ كَانَ عَبۡدًا شَكُورًا﴾

(वास्तव में वह अति कृतज्ञ भक्त था)। [सूरह इस्राः 3], तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के संबंध में फ़रमायाः

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلۡفُرۡقَانَ عَلَىٰ عَبۡدِهِۦ لِيَكُونَ لِلۡعَٰلَمِينَ نَذِيرًا ١﴾

(शुभ है वह -अल्लाह- जिस ने फ़ुर्क़ान अवतरित किया अपने बंदे पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो)। [सूरह फ़ुर्क़ानः 1]

तथा इब्राहीम, इस्हाक़ एवं याक़ूब अलैहिमुस्सलाम के संबंध में फ़रमायाः

﴿وَٱذۡكُرۡ عِبَٰدَنَآ إِبۡرَٰهِيمَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ أُوْلِي ٱلۡأَيۡدِي وَٱلۡأَبۡصَٰرِ ٤٥ إِنَّآ أَخۡلَصۡنَٰهُم بِخَالِصَةٖ ذِكۡرَى ٱلدَّارِ ٤٦ وَإِنَّهُمۡ عِندَنَا لَمِنَ ٱلۡمُصۡطَفَيۡنَ ٱلۡأَخۡيَارِ ٤٧﴾

(तथा याद करो, हमारे बंदे इब्राहीम, इस्हाक़ एवं याक़ूब को, जो कर्म शक्ति तथा ज्ञान चक्षू वाले थे। हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी विशेषता परलोक (आख़िरत) की याद के साथ)। सूरह स़ादः 45-47।

और मर्यम के पुत्र ईसा -अलैहिस्सलाम- के सम्बंध में फ़रमाया :

﴿إِنۡ هُوَ إِلَّا عَبۡدٌ أَنۡعَمۡنَا عَلَيۡهِ وَجَعَلۡنَٰهُ مَثَلٗا لِّبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٥٩﴾

(वह तो हमारे ऐसे भक्त थे, जिसपर हमने उपकार किया तथा उसे बनी इस्राईल के लिए उदाहरण बनाया)।[सूरह ज़ुख़रुफ़: 59]

रसूलों पर ईमान लाने में चार चीजें सम्मिलित हैं:

प्रथमः इस बात पर ईमान कि उनकी रिसालत अल्लाह की ओर से सत्य है। अतः जिसने उनमें से किसी एक की रिसालत (पैगम्बरी) को अस्वीकार किया, उसने समस्त रसूलों के साथ कुफ़्र किया, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿كَذَّبَتۡ قَوۡمُ نُوحٍ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ١٠٥﴾

(नूह -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने रसूलों को झुठलाया)। [सूरह शुअराः 105]। अतः अल्लाह ने उन्हें सभी रसूलों को झुठलाने वाला बना दिया, जबकि उस समय जब उन्होंने नूह -अलैहिस्सलाम- को झुठलाया था, तो वहाँ

उनके सिवा कोई और रसूल नहीं था, इस तरह देखा जाए, तो ईसाई, जिन्होंने अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाया और आपकी अवमानना की, वे ईसा -अलैहिस्सलाम- को भी झुठलाने वाले और उनकी अवमानना करने वाले ठहरे। खास तौर से इसलिए भी कि उन्होंने मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- का सुसमाचार सुनाया था और उस सुसमाचार का अर्थ यही था कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- रसूल बनकर आएँगे तथा लोगों को गुमराही से निकालकर सीधे मार्ग पर लगाने का काम करेंगे।

द्वितीय: उन पैगंबरों पर ईमान लाना जिनके नाम हमें पता हैं, जैसे: मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), इब्राहीम, मूसा, ईसा, और नूह अलैहिमुस्सलाम। और ये पांचों बड़े दृढ़-संकल्प वाले रसूल हैं, तथा अल्लाह तआला ने उन्हें क़ुरआन के दो स्थानों में उल्लेख किया है, अपने इस कथन में:

﴿وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مِيثَٰقَهُمۡ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٖ وَإِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبۡنِ مَرۡيَمَۖ وَأَخَذۡنَا مِنۡهُم مِّيثَٰقًا غَلِيظٗا ٧﴾ وقوله: ﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِۦ نُوحٗا وَٱلَّذِيٓ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ وَمَا وَصَّيۡنَا بِهِۦٓ إِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰٓۖ أَنۡ أَقِيمُواْ ٱلدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُواْ فِيهِۚ كَبُرَ عَلَى ٱلۡمُشۡرِكِينَ مَا تَدۡعُوهُمۡ إِلَيۡهِۚ ٱللَّهُ يَجۡتَبِيٓ إِلَيۡهِ مَن يَشَآءُ وَيَهۡدِيٓ إِلَيۡهِ مَن يُنِيبُ ١٣﴾

(और जब हमने समस्त नबियों से वचन लिया तथा आपसे तथा नूह से

तथा इब्राहीम से तथा मूसा से तथा मर्यम के पुत्र ईसा से, और हमने उन सब से पक्का वचन लिया)। [सूरह अहज़ाब: 7]

तथा अपने इस कथन में: (उस ने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया है, जिसका आदेश उसने नूह को दिया और जिसकी वह्य हमने आपकी ओर की, तथा जिसका आदेश हमने इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को दिया। यह कि इस धर्म को क़ायम करो और इसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ। बहुदेववादियों पर वह बात भारी है जिसकी ओर आप उन्हें बुलाते हैं। अल्लाह जिसे चाहता है, अपने लिए चुन लेता है और अपनी ओर मार्ग उसी को दिखाता है, जो उसकी ओर लौटता है। [सूरह शूरा: 13]

लेकिन जिन रसूलों का नाम हम नहीं जानते, हम उन पर संक्षेप रूप से ईमान रखेंगे। उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है:

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ...﴾

(तथा (हे नबी!) हम भेज चुके हैं बहुत-से रसूलों को आपसे पूर्व, जिन में से कुछ का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा कुछ का वर्णन आपसे नहीं किया है)। [सूरह ग़ाफ़िर: 78]

तृतीय: उन पैगंबरों की सच्ची खबरों की पुष्टि करना, जो उनके बारे में प्रमाणित हैं।

चतुर्थ: जो रसूल हमारे पास भेजा गया है, उसकी शरीअत पर अमल किया जाए। हमारी ओर भेजे गए रसूल का नाम मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- है, जिनको तमाम लोगों की ओर रसूल बनाकर भेजा गया था। उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है:

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا

يَجِدُواْ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ حَرَجٗا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسۡلِيمٗا ٦٥﴾

(ऐ पैगम्बर) तुम्हारे रब की कसम, वह उस समय तक मोमिन नहीं होंगे जब तक यह आपसी झगड़ों में आपको पंच एवं निर्णय करने वाला न बना लें, फिर आपके निर्णय से दिलों में कोई क्षति एवं संकीर्णता महसूस न करें और प्रसन्नता के साथ उसे स्वीकार (न) कर लें। [सूरह निसाः 65]

रसूलों पर ईमान के बहुत से बड़े-बड़े फ़ायदे हैं। कुछ फ़ायदे इस प्रकार हैं:

पहलाः अल्लाह की इस अनुकंपा एवं कृपा का ज्ञान कि उसने बंदों की ओर रसूलों को भेजा, ताकि वे उन्हें अल्लाह का सीधा मार्ग दिखाएं, तथा उन को अल्लाह की इबादत करने का तरीक़ा बताएँ, क्योंकि मानव विवेक अकेले इसे मालूम नहीं कर सकता।

दूसराः उच्च एवं महान अल्लाह की इस विशाल नेमत (अनुग्रह) पर उसका शुक्र अदा करना।

तीसराः रसूलों -अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम- से प्रेम, उनका सम्मान और इस बात पर उनकी उचित प्रशंसा कि वे अल्लाह के रसूल हैं, उन्होंने अल्लाह की इबादत की, उसका संदेश पहुँचाया और उसके बंदों का भला चाहा।

कुछ शत्रुता वाली प्रवृति के लोगों ने अपने रसूलों को यह कहकर झुठलाया कि उच्च एवं महान अल्लाह के रसूल इन्सान नहीं होते। अल्लाह ने उनके इस दावे को निराधार बताते हुए कहा है:

﴿وَمَا مَنَعَ ٱلنَّاسَ أَن يُؤۡمِنُوٓاْ إِذۡ جَآءَهُمُ ٱلۡهُدَىٰٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓاْ أَبَعَثَ ٱللَّهُ بَشَرٗا رَّسُولٗا ٩٤ قُل لَّوۡ كَانَ فِي ٱلۡأَرۡضِ مَلَٰٓئِكَةٞ يَمۡشُونَ مُطۡمَئِنِّينَ لَنَزَّلۡنَا عَلَيۡهِم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَلَكٗا رَّسُولٗا ٩٥﴾

(और नहीं रोका लोगों को कि वह ईमान लाएं, जब उन के पास मार्गदर्शन

आ गया, परंतु इस ने कि उन्होंने कहाः क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है। (हे नबी) आप कह दें कि यदि धरती में फ़रिश्ते निश्चिंत हो कर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फ़रिश्ता रसूल बना कर उतारते)। [सूरह इस्राः 94-95]।

अतः अल्लाह ने इस दावा को अस्वीकार किया कि पैगंबर का मनुष्य होना आवश्यक है, क्योंकि वह मनुष्यों के पास भेजे गए हैं जो धरती पर निवास करते हैं। यदि धरती पर निवास करने वाले फ़रिश्ते (स्वर्गदूत) होते, तो अल्लाह आकाश से एक फ़रिश्ता को ही भेजता, ताकि वह उन्ही में से एक हों, और इस प्रकार, अल्लाह ने उन लोगों की बातों को उद्धृत किया जो पैगंबरों को झुठलाते थे, कि उन लोगों ने कहा:

﴿...إِنۡ أَنتُمۡ إِلَّا بَشَرٞ مِّثۡلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعۡبُدُ ءَابَآؤُنَا فَأۡتُونَا بِسُلۡطَٰنٖ مُّبِينٖ قَالَتۡ لَهُمۡ رُسُلُهُمۡ إِن نَّحۡنُ إِلَّا بَشَرٞ مِّثۡلُكُمۡ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦۖ وَمَا كَانَ لَنَآ أَن نَّأۡتِيَكُم بِسُلۡطَٰنٍ إِلَّا بِإِذۡنِ ٱللَّهِ...﴾

(उन्होंने कहाः तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पूरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे, तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ। उन से उन के रसूलों ने कहाः हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परंतु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें)। [सूरह इब्राहीमः 10-11]

***

आख़िरत के दिन पर ईमान

यौम -ए- आख़िरत: क़यामत का दिन है जिस दिन लोगों को हिसाब-किताब और उसके अनुसार प्रतिफल देने के लिए उठाया जाएगा।

उसे अरबी में 'अल-यौम अल-आख़िर' (अंतिम दिन) इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसके बाद कोई दिन नहीं होगा। उस दिन जन्नत वाले जन्नत में और जहन्नम वाले जहन्नम में अपने ठिकाने ग्रहण कर लेंगे।

आख़िरत के दिन पर ईमान के अंदर तीन बातें आती हैं:

प्रथमः दोबारा जीवित करके उठाए जाने पर ईमान: होगा यूँ कि जब सूर में दूसरी बार फूँक मारी जाएगी, तो लोग सारे संसार के पालनहार के सामने, नंगे पाँव, निर्वस्त्र होकर और बिना ख़तना की हुई अवस्था में उपस्थित हो जाएँगे। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿... كَمَا بَدَأۡنَآ أَوَّلَ خَلۡقٖ نُّعِيدُهُۥۚ وَعۡدًا عَلَيۡنَآۚ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ﴾

(जिस प्रकार हमने (संसार को) पहले पैदा किया था, उसी प्रकार दोबारा पैदा कर देंगे। यह हमारा वादा है, हम ऐसा अवश्य करने वाले हैं)। [सूरह अल्-अम्बिया: 104]

अल् बअस़ अर्थातः पुनर्वजीवित किया जानाः दोबारा जीवित होकर उठना सत्य एवं साबित है। यह अल्लाह की किताब क़ुरआन, उसके रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सुन्नत एवं मुसलमानों के मतैक्य से प्रमाणित है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿ثُمَّ إِنَّكُم بَعۡدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ١٥ ثُمَّ إِنَّكُمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ تُبۡعَثُونَ١٦﴾

(फिर तुम सब इस के पश्चात अवश्य मरने वाले हो। फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किए जाओगे।)। [सूरह अल् मोमिनूनः 15-16]

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: "लोगों को क़यामत के दिन नंगे पैर, बिना कपड़ों और बिना ख़तने के उठाया जाएगा"। मुत्तफ़क़ अलैह (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)।

दोबारा उठाए जाने के मसले पर समस्त मुसलमान सहमत हैं कि यह सत्य है, और यह बुद्धिमत्ता के अनुसार है, क्योंकि यह आवश्यक है कि ईश्वर इस सृष्टि के लिए एक पुनरुत्थान स्थान बनाए, जहां उन्हें उनके द्वारा भेजे गए दूतों के माध्यम से दी गई शिक्षाओं के अनुसार पुरस्कृत या दंडित किया जाएगा। अल्लाह तआला ने कहा है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَٰكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾﴾

(क्या तुमने समझ रखा है कि हमने तुम्हें व्यर्थ ही पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाए जाओगे?)। [सूरह मोमिनूनः 115] तथा अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संबोधित करते हुए कहा है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِى فَرَضَ عَلَيْكَ ٱلْقُرْءَانَ لَرَآدُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ...﴾

(और (हे नबी!) जिसने आप पर क़ुर्आन उतारा है, वह आपको लौटाने वाला है लौटने वाले दिन अर्थात प्रलय के दिन की ओर। [सूरह क़सस़ः 85]

द्वितीयः आख़िरत के दिन पर ईमान के अंदर शामिल दूसरी बात हिसाब-किताब और प्रतिफल पर ईमान है: बंदों के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और उन्हें उसके अनुरूप बदला भी दिया जाएगा। यह बात अल्लाह की किताब क़ुरआन, उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत और मुसलमानों के मतैक्य से साबित है।

सर्वोच्च अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ إِلَيۡنَآ إِيَابَهُمۡ ۝٢٥ ثُمَّ إِنَّ عَلَيۡنَا حِسَابَهُم ۝٢٦﴾

(उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है। फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है)। [सूरह ग़ाशियह: 26]

وقال تعالى: ﴿مَن جَآءَ بِٱلۡحَسَنَةِ فَلَهُۥ عَشۡرُ أَمۡثَالِهَاۖ وَمَن جَآءَ بِٱلسَّيِّئَةِ فَلَا يُجۡزَىٰٓ إِلَّا مِثۡلَهَا وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ۝١٦٠﴾ وقال تعالى: ﴿وَنَضَعُ ٱلۡمَوَٰزِينَ ٱلۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ فَلَا تُظۡلَمُ نَفۡسٞ شَيۡـٔٗاۖ وَإِن كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٖ مِّنۡ خَرۡدَلٍ أَتَيۡنَا بِهَاۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ۝٤٧﴾

तथा अल्लाह का कथन है: (जो व्यक्ति पुण्य का कार्य करेगा, उसे उसका दस गुना मिलेगा। तथा जो कुकर्म करेगा, उसे उसके समान दण्ड मिलेगा, तथा उन पर अत्याचार न होगा)। [सूरह अल्-अन्आम : 160]

तथा एक स्थान पर अल्लाह फ़रमाता है: (और हम क़यामत के दिन न्याय का तराज़ू रख देंगे। फिर किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा तथा यदि किसी का कर्म राई के दाने के बराबर भी होगा, तो हम उसे सामने ले आएँगे और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने वाले)। [सूरह अल् अम्बिया: 47]।

और इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: "अल्लाह, मोमिन को निकट लाता है, उसे अपनी छत्रछाया में रखता है और उससे पूछता है: क्या तुम इस पाप को जानते हो? क्या तुम उस पाप को जानते हो? मोमिन कहता है: हाँ, ऐ मेरे रब। फिर जब उसे उसके पापों की याद दिलाई जाती है और वह सोचता है कि वह बर्बाद

हो गया, अल्लाह कहता है: मैंने इसे दुनिया में छुपाया था और आज मैं इसे क्षमा करता हूँ। फिर उसे उसकी अच्छे कर्मों की किताब सौंपी जाती है। और रही बात काफिरों और मुनाफिकों की, तो उन्हें सबके सामने पुकारा जाएगा: ये वो लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूठ बोला। याद रखो, अत्याचारियों पर अल्लाह की लानत हो।" बुखारी व मुसलिम।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सही सनद के साथ प्रमाणित है: "जो व्यक्ति किसी अच्छे काम का इरादा करता है और उसे अंजाम देता है, अल्लाह उस व्यक्ति के खाते में उसे दस से सात सौ गुना, यहाँ तक कि उससे भी अधिक दर्ज करता है। वहीं, यदि कोई बुरा काम का इरादा करता है और उसे अंजाम देता है, तो अल्लाह उसके खाते में केवल एक ही बुराई दर्ज करता है।"

मुसलमान इस बात पर एकमत हैं कि कर्मों का हिसाब और इनका प्रतिफल सत्य है, और यह हिकमत एवं बुद्धि के अनुसार है। अल्लाह ने किताबें उतारीं, रसूल भेजे और बंदों पर उन शिक्षाओं को स्वीकार करने तथा उनका पालन करने का फर्ज़ ठहराया। उन लोगों से लड़ाई का आदेश दिया जो इसके विरोधी थे और उनके खून, उनकी संतान, उनकी औरतें और उनकी संपत्ति को हलाल ठहराया, यदि हिसाब और इनाम ना होता, तो यह एक बेकार की बात होती जो ह़कीम (तत्वज्ञानी) रब के योग्य नहीं होती। इस बात की ओर इशारा करते हुए अल्लाह ने फरमाया:

﴿فَلَنَسۡـَٔلَنَّ ٱلَّذِينَ أُرۡسِلَ إِلَيۡهِمۡ وَلَنَسۡـَٔلَنَّ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ٦ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيۡهِم بِعِلۡمٖۖ وَمَا كُنَّا غَآئِبِينَ ٧﴾

(तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा

रसूलों से भी अवश्य प्रश्न करेंगे। फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविकता का वर्णन कर देंगे, तथा हम अनुपस्थित हनीं थे)। [सूरह आराफ़ः 6-7]

तृतीयः जन्नत और जहन्नम (स्वर्ग और नरक) पर ईमान रखना और यह कि वे सृष्टि के लिए अनंत गंतव्य हैं।

जन्नत वह आनंद का घर है जिसे अल्लाह तआला ने उन मोमिनों और परहेज़गारों के लिए तैयार किया है, जिन्होंने उन बातों पर विश्वास रखा, जिन पर विश्वास रखना अल्लाह ने अनिवार्य किया है, अल्लाह और उसके रसूल का अनुसरण किया, अल्लाह के प्रति निष्ठावान रहा और रसूल की बात मानकर जीवन बिताया। उस में भिन्न-भिन्न प्रकार की ऐसी नेमतें हैं, जिन्हें न किसी आँख ने देखा है, ने किसी कान ने सुना है और न उनकी कल्पना किसी दिल ने किया है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أُوْلَٰٓئِكَ هُمۡ خَيۡرُ ٱلۡبَرِيَّةِ ٧ جَزَآؤُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ جَنَّٰتُ عَدۡنٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۖ رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُۚ ذَٰلِكَ لِمَنۡ خَشِيَ رَبَّهُۥ ٨﴾ وقال تعالى: ﴿فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٞ مَّآ أُخۡفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعۡيُنٖ جَزَآءَۢ بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٧﴾

(जो लोग ईमान लाए, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन हैं। उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरे बहती होंगी, वे उन में सदा निवास करेंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, तथा वे अल्लाह से प्रसन्न हुए, यह उस के लिए है जो अपने

पालनहार से डरे)। [सूरह बय्यिनह :7-8]

तथा अल्लाह तआला फ़रमाता है: (कोई नफ़्स नहीं जानता, जो कुछ हमने उनकी आँखों की ठंडक उनके लिए छुपा रखी है। वह जो कुछ करते थे यह उसका बदला है)। [सूरह सज्दा: 17]

रही बात जहन्नम की, तो वह यातना का घर है, जिसे अल्लाह ने अत्याचारी काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है, जिन्होंने उसके प्रति अविश्वास जताया और उसके रसूलों को झुठलाया। उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की ऐसी यातनाएँ हैं, जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती,

قال تعالى: ﴿وَٱتَّقُواْ ٱلنَّارَ ٱلَّتِيٓ أُعِدَّتۡ لِلۡكَٰفِرِينَ ١٣١﴾وقال تعالى: ﴿وَقُلِ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكُمۡۖ فَمَن شَآءَ فَلۡيُؤۡمِن وَمَن شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡۚ إِنَّآ أَعۡتَدۡنَا لِلظَّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمۡ سُرَادِقُهَاۚ وَإِن يَسۡتَغِيثُواْ يُغَاثُواْ بِمَآءٖ كَٱلۡمُهۡلِ يَشۡوِي ٱلۡوُجُوهَۚ بِئۡسَ ٱلشَّرَابُ وَسَآءَتۡ مُرۡتَفَقٗا ٢٩﴾ وقال تعالى: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَعَنَ ٱلۡكَٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيرًا ٦٤ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيّٗا وَلَا نَصِيرٗا ٦٥ يَوۡمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمۡ فِي ٱلنَّارِ يَقُولُونَ يَٰلَيۡتَنَآ أَطَعۡنَا ٱللَّهَ وَأَطَعۡنَا ٱلرَّسُولَا۠ ٦٦﴾

उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है: (तथा उस अग्नि से बचो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है)। [सूरह आले इमरान :131]

(आप कह दें कि ये सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से, तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे, निश्चय हमने अत्याचारियों के लिए ऐसी अग्नि तैयार कर रखी है, जिसकी प्राचीर ने उन्हें घेर लिया है और यदि वे जल के लिए गुहार करेंगे, तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जाएगा,

जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पेय है और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!)। [सूरह कह्फ़: 29]

तथा अल्लाह का कथन हैः (अल्लाह ने काफ़िरों पर धिक्कार भेजी है, तथा उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार कर रखी है, जिसमें वे सदैव रहेंगे, वह कोई पक्षधर एवं सहायता करना वाला न पायेंगे। जिस दिन उनके मुख आग में उल्टे-पल्टे जायेंगे। (पश्चाताप तथा खेद से) कहेंगे: कि काश ! हम अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करते!)। [सूरह अल्-अह्ज़ाब : 64-66]

आख़िरत के दिन पर ईमान के बहुत-से बड़े-बड़े फ़ायदे हैं। कुछ फ़ायदे इस प्रकार हैं:

प्रथमः इस से उस दिन मिलने वाले सवाब एवं पुण्य की आशा में अच्छे कर्म करने की चाहत पैदा होती है।

द्वितीयः इस से उस दिन के दंड के भय से पाप करने और उसमें संतोष पाने से डर पैदा होता है।

तृतीयः यह मोमिन के लिए, दुनिया की उन नेमतों से सांत्वना का कारण है, जो उसे प्राप्त नहीं हो पातीं। क्योंकि उसे पारलौकिक नेमतों तथा प्रतिदानों की आशा रहती है।

काफ़िरों ने मौत के बाद दोबारा जीवित होकर उठने का इनकार इस कारण से किया कि उन्हें लगता है कि यह संभव नहीं है।

लेकिन उनका यह दावा निराधार है। इसके आधारहीन होने की पुष्टि शरीअत, ह़िस्स (अनुभव) तथा अक़्ल तीनों से होती है।

जहाँ तक शरीअत से इस के आधारहीन होने की बात है, तो अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿زَعَمَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَن لَّن يُبۡعَثُواْۚ قُلۡ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡۚ وَذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٞ ٧﴾

(समझ रखा है काफ़िरों ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किए जाएंगे, आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है, तथा यह अल्लाह पर अति सरल है)। [सूरह तग़ाबुन :7] इस बात पर सारे आसमानी ग्रंथों का मतैक्य भी है।

जहाँ तक हिस्स (अनुभव) की बात है, तो अल्लाह ने इस दुनिया में भी अपने बंदों को मुर्दों को जीवित करने का उदाहरण दिखा दिया है, सूरा बक़रह में इसके पाँच उदाहरण मौजूद हैं, जो कुछ इस प्रकार हैं:

पहला उदाहरण: मूसा -अलैहिस्सलाम- की क़ौम ने उनसे कहा:

﴿...لَن نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهۡرَةٗ ...﴾

(हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे)। [सूरह अल-बक़रह: 55]। तो अल्लाह ने उन्हें मौत दी, फिर उन्हें जीवित किया, तथा इस बारे में अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को संबोधित करते हुए कहा:

﴿وَإِذۡ قُلۡتُمۡ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى ٱللَّهَ جَهۡرَةٗ فَأَخَذَتۡكُمُ ٱلصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمۡ تَنظُرُونَ ٥٥ ثُمَّ بَعَثۡنَٰكُم مِّنۢ بَعۡدِ مَوۡتِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ ٥٦﴾

(तथा (याद करो) जब तुम ने मूसा से कहाः हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते-

देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव हो कर गिर गए)। फिर (निर्जीव होने के पश्चात) हम ने तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो)। [सूरह बक़रह: 55-56]

दूसरा उदाहरणः जब बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का वध कर दिया गया और उसके बारे में बनी इस्राईल का मतभेद हो गया, तो अल्लाह ने उन्हें एक गाय ज़बह कर उसके एक अंग से उसे मारने का आदेश दिया, ताकि मारा गया व्यक्ति यह बता दे कि उसकी हत्या किसने की है? इसके बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने फ़रमाता हैः

﴿وَإِذۡ قَتَلۡتُمۡ نَفۡسٗا فَٱدَّٰرَٰٔتُمۡ فِيهَاۖ وَٱللَّهُ مُخۡرِجٞ مَّا كُنتُمۡ تَكۡتُمُونَ ٧٢ فَقُلۡنَا ٱضۡرِبُوهُ بِبَعۡضِهَاۚ كَذَٰلِكَ يُحۡيِ ٱللَّهُ ٱلۡمَوۡتَىٰ وَيُرِيكُمۡ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُونَ ٧٣﴾

(और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे। अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो, इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करेगा, और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, ताकि तुम समझो)। [सूरह बक़रह: 72-73]

तीसरा उदाहरणः अल्लाह ने कुछ लोगों का क़िस्सा बयान करते हुए कहा है कि हज़ारों की संख्या में अपने घरों से मौत के भय से निकल गए, तो अल्लाह ने उन्हें मार दिया और उसके बाद फिर जीवित किया। इस विषय में उच्च एवं महान अल्लाह कहता है:

﴿أَلَمۡ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ خَرَجُواْ مِن دِيَٰرِهِمۡ وَهُمۡ أُلُوفٌ حَذَرَ ٱلۡمَوۡتِ فَقَالَ

لَهُمُ ٱللَّهُ مُوتُواْ ثُمَّ أَحۡيَٰهُمۡۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَذُو فَضۡلٍ عَلَى ٱلنَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَشۡكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾

(क्या आपने उनकी दशा पर विचार नहीं किया, जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये, जबकि उनकी संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में, अल्लाह लोगों के लिए बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञता नहीं करते)। [सूरह बक़रह: 243]

चौथा उदाहरणः अल्लाह ने एक व्यक्ति का क़िस्सा बयान किया है कि वह एक मृत बस्ती के निकट से गुज़रा, तो उसे लगा कि इसे अल्लाह जीवित नहीं कर सकता। अतः अल्लाह ने उसे सौ सालों के लिए मौत दे दी और उसके बाद फिर जीवित किया। इसके संबंध में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿أَوۡ كَٱلَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرۡيَةٖ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحۡيِۦ هَٰذِهِ ٱللَّهُ بَعۡدَ مَوۡتِهَاۖ فَأَمَاتَهُ ٱللَّهُ مِاْئَةَ عَامٖ ثُمَّ بَعَثَهُۥۖ قَالَ كَمۡ لَبِثۡتَۖ قَالَ لَبِثۡتُ يَوۡمًا أَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٖۖ قَالَ بَل لَّبِثۡتَ مِاْئَةَ عَامٖ فَٱنظُرۡ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمۡ يَتَسَنَّهۡۖ وَٱنظُرۡ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجۡعَلَكَ ءَايَةٗ لِّلنَّاسِۖ وَٱنظُرۡ إِلَى ٱلۡعِظَامِ كَيۡفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكۡسُوهَا لَحۡمٗاۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥ قَالَ أَعۡلَمُ أَنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ﴿٢٥٩﴾

(अथवा उस व्यक्ति के प्रकार, जो एक ऐसी नगरी से गुज़रा, जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उसने कहाः अल्लाह इसके ध्वस्त हो जाने के पश्चात् इसे कैसे जीवित (आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक

मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया और कहाः तुम कितनी अवधि तक मुर्दा पड़े रहे? उसने कहाः एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहाः बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने-पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकी हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी (चिन्ह) बना दें तथा (गधे की) अस्थियों को देखो कि हम उन्हें कैसे खड़ा करते हैं और उनपर कैसे माँस चढ़ाते हैं? इस प्रकार जब उसके समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह पुकार उठा कि मझे (प्रत्यक्ष) ज्ञान हो गया कि अल्लाह जो चाहे, कर सकता है)। [सूरह बक़रह: 259]

पाँचवां उदाहरणः जबकि अल्लाह के परम मित्र इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- के क़िस्से में है कि जब उन्होंने अल्लाह से पूछा कि वह मरे हुए लोगों को कैसे जीवित करता है, तो अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया कि चार पक्षियों को ज़बह करें और उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके आस-पास के पहाड़ों में फेंक दें और उनको पुकारें। उनके सारे अंग एक-दूसरे से जुड़कर पक्षी बन जाएँगे और वे दौड़ती हुई इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- के पास आ जाएँगी। इस क़िस्से को बयान करते हुए उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿وَإِذۡ قَالَ إِبۡرَٰهِـۧمُ رَبِّ أَرِنِي كَيۡفَ تُحۡيِ ٱلۡمَوۡتَىٰۖ قَالَ أَوَلَمۡ تُؤۡمِنۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطۡمَئِنَّ قَلۡبِيۖ قَالَ فَخُذۡ أَرۡبَعَةٗ مِّنَ ٱلطَّيۡرِ فَصُرۡهُنَّ إِلَيۡكَ ثُمَّ ٱجۡعَلۡ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٖ مِّنۡهُنَّ جُزۡءٗا ثُمَّ ٱدۡعُهُنَّ يَأۡتِينَكَ سَعۡيٗاۚ وَٱعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٞ ٢٦٠﴾

(तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे जीवित कर देता है? (अल्लाह ने) कहा: क्या तुम ईमान नहीं लाए? उसने कहा: क्यों नहीं? परन्तु (इस कारण पूछ रहा हूं) ताकि मेरे

दिल को संतोष हो जाए। अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ और उन्हें अपने से परिचित कर लो। (फिर उन्हें वध करके) उनका एक-एक अंश पर्वत पर रख दो। फिर उन्हें पुकारो। वे तुम्हारे पास दौड़े चले आएंगे और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है)। [सूरह बक़रह: 260]

यह पाँच महसूस एवं अनुभव की जाने वाली घटनाएँ हैं, जो मुर्दों के जीवित होने की संभावना को प्रमाणित करती हैं। हम इससे पहले इशारा कर आए हैं कि अल्लाह ने ईसा बिन मर्यम -अलैहिस्सलाम- को यह चमत्कार प्रदान किया था कि वह अल्लाह की अनुमति से मरे हुए लोगों को जीवित तथा उन्हें उनकी क़ब्रों से निकाल सकते थे।

रही बात अक़्ल (बुद्धि) की, तो यह दो तरह से इसे प्रमाणित करती है:

प्रथमः अल्लाह आकाशों एवं धरती तथा दोनों के बीच मौजूद सारी चीज़ों का रचयिता और उन्हें प्रथम बार पैदा करने वाला (सृजनकारी) है, और ज़ाहिर सी बात है कि किसी चीज़ को प्रथम बार बनाने वाला दोबारा उसे बनाने से विवश नहीं हो सकता, सर्वोच्च अल्लाह फ़रमाता हैः

﴿وَهُوَ ٱلَّذِى يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ...﴾ وقال تعالى: ﴿...كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُۥ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَآ ۚ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ﴾

(और वही अल्लाह है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उसे वह दोबारा (पैदा) करेगा और यह उस पर अधिक आसान है)। [सूरह रूम: 27]

तथा अल्लाह फ़रमाता हैः (जिस प्रकार हमने (संसार को) पहले पैदा किया था, उसी प्रकार दोबारा पैदा कर देंगे । यह हमारा वादा है, हम ऐसा अवश्य करने वाले हैं)। [सूरह अल्-अम्बिया: 104] उच्च एवं महान अल्लाह ने सड़ी-गली हड्डियों को जीवित करने की संभावना का इनकार करने वाले

का खंडन करते हुए कहा है:

﴿قُلۡ يُحۡيِيهَا ٱلَّذِيٓ أَنشَأَهَآ أَوَّلَ مَرَّةٖۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلۡقٍ عَلِيمٌ ٧٩﴾

(आप कह दें: वही, जिसने पैदा किया है प्रथम बार और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली-भाँति जानने वाला है)। [सूरह यासीन: 79]

दूसराः हम देखते हैं कि धरती मृत एवं बंजर होती है। उसमें पेड़-पौधे नहीं होते। लेकिन जैसे ही बारिश होती है, तो वह जीवित हो जाती है और उसमें चहुँ ओर हरियाली फैल जाती है। सच पूछिए तो जो अल्लाह इस मृत भूमि को जीवित कर सकता है, वह मरे हुए लोगों को भी जीवित कर सकता है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿وَمِنۡ ءَايَٰتِهِۦٓ أَنَّكَ تَرَى ٱلۡأَرۡضَ خَٰشِعَةً فَإِذَآ أَنزَلۡنَا عَلَيۡهَا ٱلۡمَآءَ ٱهۡتَزَّتۡ وَرَبَتۡۚ إِنَّ ٱلَّذِيٓ أَحۡيَاهَا لَمُحۡيِ ٱلۡمَوۡتَىٰٓۚ إِنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ٣٩﴾ وقال تعالى: ﴿وَنَزَّلۡنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ مُّبَٰرَكٗا فَأَنۢبَتۡنَا بِهِۦ جَنَّٰتٖ وَحَبَّ ٱلۡحَصِيدِ ٩ وَٱلنَّخۡلَ بَاسِقَٰتٖ لَّهَا طَلۡعٞ نَّضِيدٞ ١٠ رِّزۡقٗا لِّلۡعِبَادِۖ وَأَحۡيَيۡنَا بِهِۦ بَلۡدَةٗ مَّيۡتٗاۚ كَذَٰلِكَ ٱلۡخُرُوجُ ١١﴾

(और उस (अल्लाह) की निशानियों में से (यह भी) है कि तू धरती को दबी-दबाई और शुष्क देखता है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह ताज़ा एवं निर्मल होकर उभरने लगती है। जिसने उसे ज़िन्दा कर दिया, वही निश्चित रूप से मुर्दा को भी ज़िन्दा करने वाला है, बेशक वह हर चीज़ में सक्षम है)। [सूरह फ़ुस्सिलत: 39]

तथा अल्लाह फ़रमाता हैः (तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ जल, फिर उगाए उस के द्वारा बाग़ तथा अन्न जो काटे जाएंगे। तथा खजूर के ऊँचे

वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुए हैं। जीविका के लिए बंदों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को, इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है)। [सूरह क़ाफ़: 9-11]

और अंतिम दिन पर ईमान (विश्वास) में शामिल है: मृत्यु के बाद होने वाली सभी चीजों पर ईमान, जैसे:

(क) क़ब्र की आज़माइश: यह मृतक से उसके दफनाने के बाद पूछे जाने वाले सवाल हैं, उसके रब, उसके धर्म और उसके नबी के बारे में। अल्लाह उन ईमान वालों को सच्चे उत्तर के साथ स्थिरता प्रदान करता है। वे जवाब देते हैं: मेरा रब अल्लाह है, मेरा धर्म इस्लाम है, और मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

और अल्लाह अत्याचारियों को भटका देता है, तथा काफिर कहता है: आह, आह, मुझे नहीं पता, और मुनाफिक या संदेही कहता है: मुझे नहीं पता, मैंने लोगों को कुछ कहते सुना और वही दोहरा दिया।

(ख) क़ब्र की यातना और उसकी नेमत: मुनाफ़िकों एवं काफ़िरों जैसे अत्याचारियों को क़ब्र के अंदर यातना का सामना करना पड़ेगा। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿...وَلَوۡ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِي غَمَرَٰتِ ٱلۡمَوۡتِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓاْ أَيۡدِيهِمۡ أَخۡرِجُوٓاْ أَنفُسَكُمُۖ ٱلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ عَذَابَ ٱلۡهُونِ بِمَا كُنتُمۡ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ غَيۡرَ ٱلۡحَقِّ وَكُنتُمۡ عَنۡ ءَايَٰتِهِۦ تَسۡتَكۡبِرُونَ﴾

(यदि आप अत्याचारियों को मौत की घोर यातना में देखेंगे, जब फरिश्ते अपने हाथ फैलाये होते हैं (और कहते हैं) कि अपने प्राण निकालो । आज तुम्हें अल्लाह पर अनुचित आरोप लगाने तथा अभिमानपूर्वक उसकी आयतों का इन्कार करने के कारण अपमानकारी प्रतिकार दिया जायेगा)। [सूरह अल्-

अन्आम : 93]

तथा अल्लाह तआला ने आले फ़िरऔन के संबंद में फ़रमायाः

﴿ٱلنَّارُ يُعۡرَضُونَ عَلَيۡهَا غُدُوّٗا وَعَشِيّٗاۚ وَيَوۡمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدۡخِلُوٓاْ ءَالَ فِرۡعَوۡنَ أَشَدَّ ٱلۡعَذَابِ ٤٦﴾

(वे प्रस्तुत किए जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या, तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यग आदेश होगा) कि डाल दो फ़िरऔनियों को कड़ी यातना में))। [सूरह ग़ाफ़िर: 46]

तथा स़हीह़ मुस्लिम में ज़ैद बिन स़ाबित रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यदि यह डर न होता कि तुम एक-दूसरे को दफनाना बंद कर दोगे, तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि वह तुम्हें क़ब्र के अज़ाब का वह हिस्सा सुनाए जो मैं सुनता हूँ।" फिर आप ने अपना चेहरा घुमाया और कहा: "नरक की यातना एवं अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो।" उन्होंने कहा: "हम नरक के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगते हैं।" फिर कहा: "क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो।" उन्होंने कहा: "हम क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगते हैं।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हर प्रकार के फितनों (आजमाइशों) से चाहे वे प्रकट हों या छिप्र, अल्लाह की पनाह मांगो।" उन्होंने कहा: "हम हर प्रकार के फितनों से अल्लाह की पनाह मांगते हैं, चाहे वे प्रकट हों या छिप्र।" फिर फ़रमाया: "दज्जाल के फितने से अल्लाह की पनाह मांगो।" उन्होंने कहा: "हम दज्जाल के फितने से अल्लाह की पनाह मांगते हैं।"

कब्र की नेमतें: सच्चे ईमान वालों के लिए हैं, अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُواْ وَلَا تَحۡزَنُواْ وَأَبۡشِرُواْ بِٱلۡجَنَّةِ ٱلَّتِي كُنتُمۡ تُوعَدُونَ ٣٠﴾

(निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थिर रह गए तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है)। [सूरत फुस्सिलत: 30]

तथा अल्लाह का फ़रमान है: (फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं। और तुम उस समय देखते रहते हो। तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परंतु तुम नहीं देख सकते। तो यदि तुम किसी के अधीन नहीं हो। तो उस (प्राण) को फेर क्यों नहीं लाते, यदि तुम सच्चे हो? फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है। तो उस के लिए सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरा स्वर्ग है)।

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मोमिन के संबंध में फ़रमाया कि जब वह अपनी क़ब्र में दो फ़रिश्तों के सवालों का जवाब देता है, तो: "आकाश से एक पुकारने वाला पुकारता है: मेरे बन्दे ने सत्य कहा, उस के लिए जन्नत का बिस्तर बिछाओ, उसे जन्नत का कपड़ा पहनाओ, और उसके लिए जन्नत की ओर एक दरवाज़ा खोलो, तो उस तक जन्नत की ताजगी और सुगंध आती है, और उसकी क़ब्र उसकी दृष्टि की सीमा तक विस्तृत कर दी जाती है।" इसे अहमद और अबू दाऊद ने एक लंबी हदीस में वर्णित किया है।

कुछ पथभ्रष्ट लोगों ने क़ब्र की यातना एवं नेमतों का इनकार किया है और कहा है कि यह संभव नहीं है, क्योंकि यह वास्तविकता के विपरीत है। उनका

कहना है कि अगर क़ब्र खोद कर मुर्दे को देखा जाए, तो मिलेगा कि क़ब्र जैसी थी, वैसी ही है, न विस्तारित हुई है और न तंग।

लेकिन उनका यह दावा निराधार है। इसका निराधार होना शरीअत, हिस्स (अनुभव) और अक़्ल से साबित है:

जहाँ तक शरीअत से इसके निराधार होने की बात है: तो इससे पहले हम क़ब्र की यातना तथा नेमतों को सिद्ध करने वाली क़ुरआन की आयतें और हदीसें बयान कर आए हैं।

और सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है वह कहते हैं: "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना के किसी बाग़ से गुज़रे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो व्यक्तियों की आवाज़ सुनी जो अपनी क़ब्रों में अज़ाब भुगत रहे थे।" फिर उन्होंने हदीस का उल्लेख किया, जिस में यह है: "उन में से एक पेशाब करने में सावधानी नहीं करता था," और एक अन्य रिवायत में है: "अपने पेशाब से नहीं बचता था," और दूसरा चुगली करता था। और मुस्लिम की एक रिवायत में है: "पेशाब (के छींटों) से नहीं बचता था।"

जहाँ तक हिस्स (इन्द्रियों) की बात है: तो सोने वाला अपने सपने में देखता है कि वह एक विस्तृत और खुशहाल स्थान में है, जहाँ वह आनंदित होता है, या फिर वह एक संकीर्ण और भयावह स्थान में है, जहाँ उसे कष्ट होता है, और कभी-कभी वह उस देखे हुए से जाग भी जाता है, इसके बावजूद, वह अपने बिस्तर पर अपने कमरे में वैसा ही होता है जैसा होता है, और नींद मृत्यु का भाई है, इसलिए अल्लाह ने इसे "वफ़ात" (मृत्यु) कहा। अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿ٱللَّهُ يَتَوَفَّى ٱلۡأَنفُسَ حِينَ مَوۡتِهَا وَٱلَّتِي لَمۡ تَمُتۡ فِي مَنَامِهَاۖ فَيُمۡسِكُ ٱلَّتِي قَضَىٰ عَلَيۡهَا ٱلۡمَوۡتَ وَيُرۡسِلُ ٱلۡأُخۡرَىٰٓ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمًّى...﴾

(अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उनके मरण के समय तथा जिसके मरण का समय नहीं आया, उसकी निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया हो मरण का तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिए)। [सूरह ज़ुमर: 42]

जहाँ तक बुद्धि की बात है: तो सोने वाला अपने सपने में ऐसी सच्ची चीज़ें देखता है जो वास्तविकता के अनुरूप होती हैं, तथा हो सकता है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके असली स्वरूप में देखे, और जिस ने उन्हें उनके वास्तविक विशेषताओं के साथ देखा, मानो उसने वास्तव में उन्हें देखा। इसके बावजूद, सोने वाला अपने बिस्तर पर अपने कमरे में होता है, उन चीज़ों से दूर जो उसने देखी हैं, अगर यह दुनिया के हालात में मुमकिन है, तो क्या आख़िरत के हालात में मुमकिन नहीं होगा?!

जहाँ तक क़ब्र की यातना एवं नेमत का इनकार करने वालों के इस दावे की बात है कि अगर क़ब्र को खोला जाए, तो नज़र आता है कि वह जैसी थी, वैसी ही है, न कुशादा हुई है और न तंग। तो इसका उत्तर कई तरह से दिया जा सकता है:

सबसे पहली बात यह है कि शरीयत की बताई हुई बातों के मुक़ाबले में इस तरह के संदेहों को प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, जिन पर अच्छे से चिंतन करने से उनका निराधार होना सिद्ध हो जाता है। अरबी की एक कहावत है कि:

कितने ही लोग सही बात पर भी आपत्ति जताते हैं।

जबकि उसकी मूल समस्या विकृत समझ होती है।

दूसराः बरज़ख़ के हालात का संबंध ग़ैब की बातों से है, जो एहसास के दायरे में नहीं आते। अगर ये एहसास के दायरे में आ जाते, तो ग़ैब पर ईमान का फ़ायदा न रह जाता और ग़ैब पर ईमान रखने वाले एवं उसकी पुष्टि न करने वाले बराबर हो जाते।

तीसरा: अज़ाब, नेमत, क़ब्र की चौड़ाई और तंगी को मृत व्यक्ति ही महसूस करता है, अन्य लोग नहीं। यह इसी प्रकार है जैसे सोने वाला सपने में देखता है कि वह एक संकीर्ण, भयावह स्थान में है या एक विस्तृत, खुशी देने वाले स्थान में है, जबकि उसके आस-पास के लोग इसे नहीं देख सकते और न ही महसूस कर सकते हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास उनके स़हाबा (साथियों) के बीच वह्य (प्रकाशना) आती थी, तो आप उसे सुनते थे, लेकिन स़हाबा नहीं सुनते थे, और कभी-कभी फ़रिश्ता एक पुरुष के रूप में आप के पास आता और आप से बात करता, किंतु स़हाबा फ़रिश्ते को नहीं देख पाते और न ही सुन पाते थे।

चौथाः सृष्टियाँ उन्हीं बातों को महसूस कर सकती है, जिनको महसूस करने की शक्ति अल्लाह ने उनको प्रदान की है। वे हर मौजूद चीज़ को महसूस कर लें, यह संभव नहीं है। चुनांचे सातों आकाश, धरती, उनके अंदर मौजूद सारी सृष्टियाँ और सारी चीज़ें अल्लाह की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता बयान करती हैं, जिसे कभी-कभी अल्लाह अपनी कुछ सृष्टियों को सुना देता है, लेकिन हम सुन नहीं सकते, इसी बात को बयान करते हुए सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह कहता है:

﴿تُسَبِّحُ لَهُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ ٱلسَّبۡعُ وَٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهِنَّۚ وَإِن مِّن شَيۡءٍ إِلَّا

يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهِۦ وَلَٰكِن لَّا تَفۡقَهُونَ تَسۡبِيحَهُمۡ...﴾

(उसकी पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और उनमें मौजूद सारी चीज़ें और प्रत्येक वस्तु उसकी प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उनके पवित्रता गान को समझते नहीं हो)। [सूरह इस्रा: 44] इसी तरह धरती पर शैतानों और जिन्नों का आना-जाना लगा रहता है। जिन्नात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए, खामोशी के साथ आपकी क़िरात सुनी और अपनी जाति के पास जाकर उनको सावधान किया। लेकिन उनकी यह सारी गतिविधियाँ हमसे छिपी रहती हैं। इसी के बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ لَا يَفۡتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ كَمَآ أَخۡرَجَ أَبَوَيۡكُم مِّنَ ٱلۡجَنَّةِ يَنزِعُ عَنۡهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوۡءَٰتِهِمَآۗ إِنَّهُۥ يَرَىٰكُمۡ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنۡ حَيۡثُ لَا تَرَوۡنَهُمۡۗ إِنَّا جَعَلۡنَا ٱلشَّيَٰطِينَ أَوۡلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ ٢٧﴾

(ऐ आदम की संतानो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें भी उसी तरह बहका दे जिस तरह उसने तुम्हारे माता-पिता को बहका कर स्वर्ग से निकलवा दिया था और उनके तन-बदन से वह वस्त्र उतरवा दिया था ताकि उनके गुप्तांगों को नग्न करके उन्हें दिखा दे। निःसंदेह वह और उसका गोत्र तुमको ऐसे स्थान से देखते हैं, जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख पाते हो। निःसंदेह हमने शैतानों को उन लोगों का मित्र बनाया है जो ईमान नहीं लाते हैं)। [सूरह आराफ़: 27] अतः जब इन्सान हर मौजूद चीज़ का एहसास नहीं कर सकता, तो उनके लिए ग़ैब की उन साबित बातों का इनकार करना उचित नहीं होता, जिन्हें वे महसूस नहीं कर सकते।

***

तक़दीर (भाग्य) पर ईमान

अल-क़दर का अर्थ है: ब्रह्मांड के संबंध में अल्लाह तआला का वह निर्धारण और निर्णय जिस का ज्ञान अल्लाह को पहले से है एवं उसकी हिकमत के अनुसार है।

तथा तक़दीर पर ईमान के अंदर चार बातें शामिल हैं:

प्रथम: इस बात पर ईमान कि अल्लाह अनादिकाल से अनंतकाल तक हर चीज़ को संक्षिप्त एवं विस्तृत रूप से जानता है। चाहे इसका संबंध उसके कार्यों से हो या उसके बंदों के कार्यों से।

द्वितीय: इस बात पर ईमान कि अल्लाह ने इन सारी बातों को लौह-ए-महफ़ूज़ (सुरक्षित तख़्ती) में लिख रखा है, इन दो बातों के बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿أَلَمۡ تَعۡلَمۡ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا فِي ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَٰبٍۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٞ ٧٠﴾

(क्या आपने नहीं जाना कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह के ज्ञान में है। यह सब लिखी हुई किताब में सुरक्षित है। अल्लाह के लिए यह कार्य अत्यन्त सरल है)। [सूरह हज्ज : 70]

और सही मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह कहते हैं: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते सुना: "अल्लाह ने पचास हज़ार साल पहले सारी सृष्टियों की तक़दीरें लिख दी थीं, जबकि उस समय आकाश एवं पृथ्वी का सृजन भी नहीं हुआ था।"

तृतीय: इस बात पर ईमान (विश्वास) कि इस ब्रह्मांड में जो कुछ होता है,

अल्लाह के इरादे (इच्छा) से होता है। चाहे उसका संबंध अल्लाह के कार्य से हो या सृष्टियों के कार्य से, उच्च एवं महान अल्लाह ने उन चीज़ों के बारे में कहा है, जिनका संबंध उसके कार्य से है:

﴿وَرَبُّكَ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخۡتَارُ...﴾ وقال: ﴿...وَيَفۡعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ﴾ وقال: ﴿هُوَ ٱلَّذِي يُصَوِّرُكُمۡ فِي ٱلۡأَرۡحَامِ كَيۡفَ يَشَآءُ...﴾ وقال تعالى فيما يتعلّق بفعل المخلوقين: ﴿...وَلَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ لَسَلَّطَهُمۡ عَلَيۡكُمۡ فَلَقَٰتَلُوكُمۡ...﴾ وقال: ﴿...وَلَوۡ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُۖ فَذَرۡهُمۡ وَمَا يَفۡتَرُونَ﴾

और आपका पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे तथा निर्वाचित करता है)। [सूरह क़सस: 68]

(और अल्लाह जो चाहता है, उसे करता है)। [सूरह इब्राहीम: 27]

तथा अल्लाह फ़रमाता है: (वही है जो तुम्हें गर्भाशयों में अपनी इच्छानुसार आकार देता है)। [सूरत आल-इमरान: 6] अल्लाह ने सृष्टियों के कर्मों के संबंध में फ़रमाया:

(यदि अल्लाह चाहता, तो उन्हें तुम पर सामर्थ्य दे देता, तो वे तुमसे लड़ते)। [सूरह निसा: 90]

तथा फ़रमाया: (और अगर अल्लाह चाहता, तो वे ऐसा नहीं करते। इसलिए आप उनको तथा उनकी मनगढ़ंत बातों को छोड़ दीजिए)। [सूरह अनआम: 112]

चतुर्थ: यह ईमान (विश्वास) रखना कि सभी सृष्टियाँ अपनी स्वभाव, गुणों और गतिविधियों सहित अल्लाह तआला की बनाई हुई हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ وَكِيلٞ ٦٢﴾ وقال سبحانه:

﴿...وَخَلَقَ كُلَّ شَيۡءٖ فَقَدَّرَهُۥ تَقۡدِيرٗا﴾

(अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ की देख-भाल करने वाला है)। [सूरह ज़ुमर: 62]

तथा पवित्र अल्लाह फ़रमाता है: (तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया)। [सूरह फ़ुर्क़ान: 2] तथा अल्लाह तआला ने अपने नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हवाले से कहा है कि उन्होंने अपनी जाति से कहा:

﴿وَٱللَّهُ خَلَقَكُمۡ وَمَا تَعۡمَلُونَ ٩٦﴾

(हालाँकि तुमको और जो तुम करते हो उसको, अल्लाह ही ने पैदा किया है)। [सूरह साफ़्फ़ात: 96]

लेकिन तक़दीर पर ईमान का मतलब कदापि यह नहीं है कि बंदे की अपने कर्मों में कोई इच्छा न हो और वह उसकी शक्ति न रखता हो, क्योंकि शरीअत एवं वास्तविकता दोनों से बंदे की इच्छा तथा उसकी शक्ति सिद्ध होती है।

जहाँ तक शरीअत की बात है, तो उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿...فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ مَـَٔابًا﴾وقال: ﴿...فَأۡتُواْ حَرۡثَكُمۡ أَنَّىٰ شِئۡتُمۡ...﴾ وقال فى القدرة: ﴿فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ مَا ٱسۡتَطَعۡتُمۡ وَٱسۡمَعُواْ وَأَطِيعُواْ...﴾وقال: ﴿لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَاۚ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَعَلَيۡهَا مَا ٱكۡتَسَبَتۡ...﴾

(अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले)।

[सूरह नबा: 39]

तथा फ़रमायाः (तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ)। [सूरह बक़रह: 223]

तथा क़ुदरत अर्थात सामर्थ्य के संबंध में फ़रमायाः (तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञापालन करो) [सूरह तग़ाबुन: 16]

एक स्थान पर फ़रमायाः (अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता, जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी को होगी)। [सूरह बक़रह: 286]

और जहां तक वास्तविकता की बात है: तो हर इन्सान यह जानता है कि उसके पास इच्छा एवं शक्ति है। इसी के द्वारा वह कोई कार्य करता है, कोई कार्य छोड़ता है। और उन कामों के बीच जो उसके इरादे से होते हैं जैसे चलना-फिरना आदि और जो उसके इरादे के बिना होते हैं जैसे सिहरन एवं कंपन आदि, अंतर है। लेकिन बंदे की चाहत और उसकी शक्ति धरातल पर अल्लाह की इच्छा और उसकी शक्ति से उतरती है। क्योंकि उच्च एवं महान अल्लाह का फ़रमान है:

﴿لِمَن شَآءَ مِنكُمۡ أَن يَسۡتَقِيمَ ٢٨ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٢٩﴾

((विशेष रूप से) उसके लिए जो तुममें से सीधे मार्ग पर चलना चाहे। तथा तुम बिना समस्त जगत के प्रभु के चाहे, कुछ नहीं चाह सकते।) [सूरह अत्-तकवीर: 28-29] साथ ही इसलिए भी कि इस ब्रह्मांड का मालिक अल्लाह है। अतः इसमें उसके ज्ञान एवं अनुमति के बिना कुछ नहीं हो सकता।

ज्ञात हो कि तक़दीर पर ईमान -जैसाकि हम ने उल्लेख किया है- बंदे को अनिवार्य कामों को छोड़ने तथा गुनाहों में पड़ने का प्रमाण नहीं देता। अतः उसका इसे प्रमाण बनाना कई कारणों से निराधार है:

पहलाः

﴿سَيَقُولُ ٱلَّذِينَ أَشۡرَكُواْ لَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشۡرَكۡنَا وَلَآ ءَابَآؤُنَا وَلَا حَرَّمۡنَا مِن شَيۡءٖۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡ حَتَّىٰ ذَاقُواْ بَأۡسَنَاۗ قُلۡ هَلۡ عِندَكُم مِّنۡ عِلۡمٖ فَتُخۡرِجُوهُ لَنَآۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَإِنۡ أَنتُمۡ إِلَّا تَخۡرُصُونَ ١٤٨﴾

(जो लोग शिर्क करते हैं, वह कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता, तो हम तथा हमारे पूर्वज शिर्क नहीं करते और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। इसी प्रकार उन लोगों ने झुठलाया, जो उनसे पहले थे, यहाँ तक कि हमारे प्रकोप का मज़ा चखकर रहे। कह दो, क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तो उसे हमारे सामने व्यक्त करो। तुम कल्पना का अनुसरण करते हो तथा मात्र अनुमान लगाते हो)। [सूरह अल्-अन्आम: 148] यदि तक़दीर पर ईमान उनके लिए प्रमाण बन पाता, तो अल्लाह उन्हें अपने प्रकोप का मज़ा नहीं चखाता।

दूसराः अल्लाह का फ़रमान हैः

﴿رُّسُلٗا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعۡدَ ٱلرُّسُلِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمٗا ١٦٥﴾

(शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाकर भेजा, ताकि लोगों के लिए कोई

बहाना एवं अभियोग, रसूलों के (भेजने के) पश्चात न रह जाये, तथा अल्लाह तआला शक्तिमान एवं पूर्ण ज्ञानी है)। [सूरह अन्-निसा : 165] अगर तक़दीर ही विरोधियों का प्रमाण होती, तो रसूलों को भेजे जाने से यह समाप्त न होती। क्योंकि उनके भेजे जाने के बाद विरोध अल्लाह के निर्णय अनुसार हुआ।

तीसरा: जिसे बुखारी और मुस्लिम -और शब्द बुखारी के हैं- ने अली इब्न अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से कोई भी ऐसा नहीं है जिसका ठिकाना, चाहे वह नरक हो या स्वर्ग, पहले ही न लिखा गया हो।" तो क़ौम के एक व्यक्ति ने कहा: "क्या हम इस पर भरोसा न करें, ऐ अल्लाह के रसूल?" आप ने फ़रमाया: "नहीं, काम करते रहो, क्योंकि हर व्यक्ति के लिए उसका रास्ता आसान कर दिया गया है।" फिर आप ने इस आयत की तिलावत कीः

﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَٱتَّقَىٰ ۝﴾

(फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया)। [सूरह अल-लैल: 5] तथा मुस्लिम की एक रिवायत में है: "हर व्यक्ति के लिए वही करना आसान होता है जिसके लिए उसे पैदा किया गया है।" पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काम करने का आदेश दिया, और तक़दीर पर निर्भर रहने से मना किया।

चौथाः उच्च एवं महान अल्लाह ने बंदे को आदेश भी दिया है और मना भी किया है और उसपर केवल उसी काम का बोझ डाला है, जिसे वह कर सकता हो। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ مَا ٱسْتَطَعْتُمْ وَٱسْمَعُواْ وَأَطِيعُواْ...﴾ وقال: ﴿لَا يُكَلِّفُ

ٱللَّهَ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَا...﴾

(तो अल्लाह से डरते रहो, जितना तुमसे हो सके तथा सुनो एवं आज्ञा पालन करो)। [सूरह तग़ाबुन: 16]

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: (अल्लाह किसी व्यक्ति को उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं देता)। [सूरह अल्-बक़रा: 286] अगर बंदा कर्म पर विवश होता, तो वह ऐसी चीज़ का पाबंद होता, जिससे वह छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता। जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। यही कारण है कि जब अनजाने में, भूलवश या मजबूरी की वजह से उससे कोई अवज्ञा होती है, तो उसे कोई गुनाह नहीं होता। क्योंकि उसके पास उचित शरई कारण होता है।

पाँचवां: अल्लाह का निर्णय एक छिपा हुआ भेद है, जिसे धरातल पर उतरने से पहले कोई जान नहीं सकता। जबकि किसी काम का इरादा उसे करने से पहले किया जाता है। ऐसे में उसकी ओर से किया गया काम का इरादा उसका अल्लाह के निर्णय के ज्ञान पर आधारित नहीं होता। लिहाज़ा तक़दीर को प्रमाण बनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। क्योंकि इन्सान जिस चीज़ को जानता न हो, उसे प्रमाण नहीं बना सकता।

छठा: हम देखते हैं कि इन्सान दुनिया की ऐसी चीज़ों को प्राप्त करने के प्रयास में रहता जो उसके लिए उपयुक्त हैं और उन्हें प्राप्त कर लेता है। ऐसा नहीं होता कि वह उपयुक्त चीज़ों को छोड़ कर अनुपयुक्त चीज़ों को प्राप्त करने का प्रयास करे और इसके लिए तक़दीर को दोषी माने। भला ऐसा क्यों नहीं होता कि धर्म के लिए लाभदायक चीज़ों की बजाय हानिकारक चीज़ों को प्राप्त करने का प्रयास करे और तक़दीर को प्रमाण स्वरूप पेश करे? क्या दोनों बातें एक जैसी नहीं हैं?!

इसे एक उदाहरण से समझिए:

यदि मनुष्य के सामने दो रास्ते हों: एक जो उसे एक ऐसे शहर की ओर ले जाता है जहाँ पूरी तरह से अराजकता, हत्या, लूटपाट, अपमान, डर और भूख है। और दूसरा जो उसे एक ऐसे शहर की ओर ले जाता है जहाँ पूरी तरह से व्यवस्था, सुरक्षित, समृद्धि और जीवन में सम्मान है। तो आप किस रास्ते का चयन करेंगे?

वह निश्चित रूप से उस दूसरे रास्ते को चुनेगा जो उसे व्यवस्था और सुरक्षा वाले शहर की ओर ले जाता है, और कोई भी समझदार व्यक्ति कभी भी अराजकता और डर वाले शहर के रास्ते पर नहीं जाएगा, यह कहते हुए कि यह उसकी क़िस्मत है। तो फिर क्यों वह आख़िरत के मामले में जन्नत के बजाय जहन्नम का रास्ता चुने और किस्मत का हवाला दे?

एक और उदाहरण: हम देखते हैं कि बीमार व्यक्ति को दवा लेने का आदेश दिया जाता है, तो वह उसे पीता है, जबकि उसका मन नहीं चाहता, और उसे उन खाद्य पदार्थों से बचने का आदेश दिया जाता है जो उसे नुकसान पहुँचाते हैं, तो वह उन्हें छोड़ देता है, जबकि उसका मन उन्हें चाहता है। यह सब स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए होता है, और वह दवा पीने से इनकार नहीं कर सकता, या वह नुकसानदायक भोजन नहीं खा सकता और क़िस्मत का हवाला नहीं दे सकता। तो फिर क्यों इंसान वह चीज़ें छोड़ देता है जिनका अल्लाह और उसके रसूल ने आदेश दिया है या वह काम करता है जिनसे अल्लाह और उसके रसूल ने मना किया है और फिर तक़दीर का हवाला देता है?

सातवाँ: जो व्यक्ति अपनी छोड़ी गई ज़िम्मेदारियों या किए गए पापों के लिए तक़दीर का हवाला देता है, अगर उस पर कोई व्यक्ति हमला करे, उसकी संपत्ति ले ले, या उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाए, फिर क़िस्मत का हवाला

दे और कहे: मुझे दोष मत दो, क्योंकि मेरा हमला अल्लाह की तक़दीर के अनुसार था, तो वह स्वयं उसकी दलील को स्वीकार नहीं करेगा। तो फिर क्यों वह तक़दीर का हवाला दूसरे के द्वारा किए गए आक्रमण के लिए स्वीकार नहीं करता, जबकि वही तक़दीर का हवाला अपने द्वारा अल्लाह तआला के अधिकारों पर किए गए आक्रमण के लिए देता है?

बताया जाता है कि अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अनहु के पास एक चोर लाया गया, जिसका हाथ काटा जाना था। जब उन्होंने हाथ काटने का आदेश दिया, तो उसने कहा : अमीरुल मोमिनीन ज़रा रुकिए। मैंने जो चोरी की है, इसे अल्लाह ने मेरी तक़दीर में लिख रखा था। यह सुन उमर बिन ख़त्ताब -रज़ियल्लाहु अनहु- ने फ़रमाया : हम जो तुम्हारा हाथ काटने जा रहे हैं, इसे भी अल्लाह ने तक़दीर में लिख रखा है।

तक़दीर पर ईमान के बहुत से बड़े-बड़े फ़ायदे हैं, कुछ फ़ायदे इस प्रकार हैं:

पहला: किसी भी कार्य को करने में अल्लाह पर भरोसा करना, इस प्रकार कि कारण पर भरोसा न हो, क्योंकि हर चीज़ अल्लाह तआला की तक़दीर से होती है।

दूसराः इन्सान मुराद पूरी होने पर अभिमान का शिकार न हो। क्योंकि नेमत अल्लाह की ओर से मिलती है, जबकि इन्सान का अभिमान उसे इस नेमत का शुक्र अदा करने से रोकता है।

तीसराः इससे इन्सान को अल्लाह के निर्णयों को सुकून और आतंरिक संतुष्टि के साथ सहन करने की शक्ति मिलती है। वह किसी प्रिय वस्तु से वंचित होने पर परेशान नहीं होता और किसी अप्रिय वस्तु के सामने आने पर व्याकुल नहीं होता। क्योंकि यह उस अल्लाह का निर्णय है जो आकाशों एवं धरती का

मालिक है और इसे हर हाल में होना था। इसी के बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ إِلَّا فِي كِتَٰبٖ مِّن قَبۡلِ أَن نَّبۡرَأَهَآۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٞ ٢٢ لِّكَيۡلَا تَأۡسَوۡاْ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمۡ وَلَا تَفۡرَحُواْ بِمَآ ءَاتَىٰكُمۡۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخۡتَالٖ فَخُورٍ ٢٣﴾

(न कोई कठिनाई (संकट) संसार में आती है न (ख़ास) तुम्हारी जानों में, मगर इससे पूर्व कि हम उसको पैदा करें, वह एक ख़ास किताब में लिखी हुई है। निःसंदेह यह (कार्य) अल्लाह पर (बिल्कुल) आसान है। ताकि अपने से छिन जाने वाली वस्तु पर दुखी न हो जाया करो, न प्रदान की हुई वस्तु पर गर्व करने लगो, तथा गर्व करने वाले अहंकारियों को अल्लाह पसन्द नहीं फ़रमाता)। [सूरह अल्-हदीद : 22-23]

«عَجَبًا لِأَمْرِ الْمُؤْمِنِ إِنَّ أَمْرَهُ كُلَّهُ خَيْرٌ، وَلَيْسَ ذَاكَ لِأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ، وَإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ».

मोमिन का मामला भी बड़ा अजीब है। उसके हर काम में उसके लिए भलाई है। जबकि यह बात मोमिन के सिवा किसी और के साथ नहीं है। यदि उसे ख़ुशहाली प्राप्त होती है और वह शुक्र करता है, तो यह भी उसके लिए बेहतर है, और अगर उसे तकलीफ़ पहुँचती है, और सब्र करता है, तो यह भी उसके लिए बेहतर है।

तक़दीर के विषय में दो सम्प्रदाय पथ-भ्रष्ट (गुमराह) हो गए हैं:

पहला: जबरिय्या, जिन्होंने कहा कि बंदा अपने कार्यों के लिए मजबूर है, और उसमें उसकी कोई इच्छा या क्षमता नहीं है।

दूसराः क़दरिय्या, बंदा खुद अपने इरादे तथा शक्ति से सब कुछ करता है। उसके काम पर अल्लाह के इरादे एवं शक्ति का कोई प्रभाव नहीं होता।

पहले समुदाय यानी जबरिय्या का खंडन शरीअत तथा वास्तविकता दोनों से:

जहाँ तक शरीअत की बात हैः तो अल्लाह ने बंदे के लिए इरादे एवं चाहत को साबित किया है और कर्म की निस्बत (संबंध) उसकी ओर की है। उसका फ़रमान है:

﴿...مِنكُم مَّن يُرِيدُ ٱلدُّنۡيَا وَمِنكُم مَّن يُرِيدُ ٱلۡأٓخِرَةَ...﴾ وقال تعالى: ﴿وَقُلِ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكُمۡۖ فَمَن شَآءَ فَلۡيُؤۡمِن وَمَن شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡۚ إِنَّآ أَعۡتَدۡنَا لِلظَّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمۡ سُرَادِقُهَا...﴾ وقال تعالى: ﴿مَّنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا فَلِنَفۡسِهِۦۖ وَمَنۡ أَسَآءَ فَعَلَيۡهَاۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّٰمٖ لِّلۡعَبِيدِ ١٦﴾

(तुममें से कुछ संसार चाहते हैं तथा कुछ परलोक चाहते हैं)। [सूरह आले इमरानः 152],

तथा अल्लाह का कथन हैः (आप कह दें कि ये सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से, तो जो चाहे, ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे, निश्चय हमने अत्याचारियों के लिए ऐसी अग्नि तैयार कर रखी है, जिसकी प्राचीर ने उन्हें घेर लिया है)। [सूरह कह्फ़: 29],

तथा फ़रमायाः (जो सदाचार करेगा, तो वह अपने ही लाभ के लिए करेगा, और जो दुराचार करेगा, तो उसका दुष्परिणाम उसी पर होगा और आपका पालनहार बंदों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है। [सूरह फ़ुस्सिलत: 46]

जहाँ तक वास्तविकता की बात हैः तो हर व्यक्ति उन कामों के बीच जिन्हें

वह अपनी इच्छा से करता है, जैसे खाना, पीना, खरीदना और बेचना आदि और उन कामों जो उसके इरादे के बिना ही हो जाया करते हैं, जैसे बुख़ार से काँपना और छत से गिर जाना आदि के बीच अंतर को जानता है। प्रथम प्रकार के कार्य वह स्वयं करता है और उसके इरादे से होते हैं, जबकि दूसरे प्रकार वह अपनी इच्छा से नहीं करता और वह उसके इरादे से नहीं होते।

दूसरे समुदाय यानी क़दरिय्या का खंडन शरीयत तथा अक़्ल (बुद्धि) दोनों से:

जहाँ तक शरीअत की बात है: तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का रचयिता है और हर चीज़ उसके इरादे से होती है। अल्लाह ने अपनी किताब पवित्र क़ुरआन में इस बात का उल्लेख किया है कि बंदों के कर्म उसके इरादे से हुआ करते हैं। उसका फ़रमान है:

﴿...وَلَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقۡتَتَلَ ٱلَّذِينَ مِنۢ بَعۡدِهِم مِّنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡهُمُ ٱلۡبَيِّنَٰتُ وَلَٰكِنِ ٱخۡتَلَفُواْ فَمِنۡهُم مَّنۡ ءَامَنَ وَمِنۡهُم مَّن كَفَرَۚ وَلَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقۡتَتَلُواْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفۡعَلُ مَا يُرِيدُ﴾ وقال تعالى: ﴿وَلَوۡ شِئۡنَا لَأٓتَيۡنَا كُلَّ نَفۡسٍ هُدَىٰهَا وَلَٰكِنۡ حَقَّ ٱلۡقَوۡلُ مِنِّي لَأَمۡلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ ١٣﴾

(और यदि अल्लाह चाहता, तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने विभेद किया, तो उनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने कुफ़्र किया और यदि अल्लाह चाहता, तो वे नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है, करता है)। [सूरह बक़रह: 253],

तथा अल्लाह का कथन है: (और यदि हम चाहते, तो प्रदान कर देते

प्रत्येक प्राणी को उसका मार्गदर्शन। परन्तु, मेरी ये बात सत्य होकर रही कि मैं अवश्य भरूँगा नरक को जिन्नों तथा इन्सानों से)। [सूरह सज्दा: 13]

जहाँ तक अक़्ल (बुद्धि) की बात है: तो सारा ब्रह्मांड अल्लाह के अधीन है। चूँकि इन्सान भी इस ब्रह्मांड का अंग है, इसलिए वह भी अल्लाह के अधीन है। जबकि हम जानते हैं कि कोई अधीन व्यक्ति मालिक की किसी वस्तु में उसकी अनुमति एवं इरादे के बिना तसर्रुफ़ (हस्तक्षेप एवं व्यवहार) नहीं कर सकता।

***

इस्लामी अक़ीदे के उद्देश्य

अरबी शब्द "अल-हदफ़" के कई अर्थ हैं। इसका एक अर्थ है वह चीज़ जिसे निशाना लगाने के लिए रखा जाए। इसी तरह: हर उस चीज़ को हदफ़ कहते हैं, जिसका इरादा किया जाए।

इस्लामी अक़ीदे के उद्देश्य: इसके अनेक मक़्सद एवं पवित्र लक्ष्य हैं, जो उनको पकड़े रहने पर प्राप्त होते हैं, जो अलग-अलग तरह के और बहुत सारे हैं। यहाँ हम उनमें से कुछ लक्ष्य बयान कर रहे हैं:

पहला: अल्लाह के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा केवल उसी की इबादत। क्योंकि वही सृष्टा है और इसमें उसका कोई साझी नहीं है। अतः इरादा भी उसी का होना चाहिए और इबादत भी उसी की होनी चाहिए।

दूसरा: बुद्धि एवं विचार को उस अराजक भ्रम से आज़ाद करना, जो हृदय के इस अक़ीदे से खाली होने के कारण पैदा होता है। क्योंकि जिसका हृदय इस अक़ीदे से खाली होता है, वह या तो हर अक़ीदे से खाली और एहसास के दायरे में आने वाले भौतिकवाद का उपासक है या फिर विभिन्न अक़ीदों एवं अंधविश्वासों की गुमराहियों में भटकता रहता है।

तीसराः फिर न दिल में कोई बेचैनी रहती है और न विचार में बिखराव होता है। क्योंकि यह अक़ीदा इन्सान को उसके सृष्टिकर्ता से जोड़ता है और वह उसे संसार का संचालन करने वाला प्रभु और विधान प्रदान करने वाला शासक मान लेता है। अतः उसका दिल उसके निर्णय से संतुष्ट और उसका सीना इस्लाम से राज़ी हो जाता है। जिसके नतीजे में वह इस्लाम का कोई विकल्प नहीं खोजता।

चौथाः इस से इन्सान का इरादा एवं अमल, अल्लाह की इबादत और लोगों के साथ व्यवहार में किसी बिगाड़ से सुरक्षित हो जाता है, क्योंकि इसकी एक बुनियाद रसूलों पर ईमान है, जिसमें रसूलों के तरीक़े का अनुसरण भी शामिल है, जो हर इरादे एवं अमल को सुरक्षित रखता है।

पाँचवांः सारे कामों में इस हद तक दृढ़ता एवं गंभीरता कि जब भी अच्छे काम का कोई अवसर मिले, इन्सान उससे सवाब की आशा में लाभ उठाए और जब भी गुनाह का कोई मौक़ा देखे दंड के भय से उससे दूर हो जाए। क्योंकि इस्लामी अक़ीदे की एक बुनियाद दोबारा उठाए जाने और कर्मों के प्रतिफल पर विश्वास भी है।

अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

﴿وَلِكُلّٖ دَرَجَٰتٞ مِّمَّا عَمِلُواْۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَٰفِلٍ عَمَّا يَعۡمَلُونَ ١٣٢﴾

(प्रत्येक के लिए उस के कर्मानुसार पद हैं, और आप का पालनहार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है)। [सूरह अन्आम: 132]

«الْمُؤْمِنُ الْقَوِيُّ خَيْرٌ وَأَحَبُّ إِلَى اللهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيفِ، وَفِي كُلٍّ خَيْرٌ، احْرِصْ عَلَى مَا يَنْفَعُكَ، وَاسْتَعِنْ بِاللهِ، وَلَا تَعْجِزْ، وَإِنْ أَصَابَكَ

شَيْءٌ فَلَا تَقُلْ: لَوْ أَنِّي فَعَلْتُ كَذَا كَانَ كَذَا وَكَذَا، وَلَكِنْ قُلْ: قَدَّرَ اللهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ؛ فَإِنَّ (لَوْ) تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ».

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस उद्देश्य की ओर अपने इस कथन में इशारा किया हैः «शक्तिशाली मोमिन कमज़ोर मोमिन के मुकाबले में अल्लाह के समीप अधिक बेहतर तथा प्रिय है। किंतु, प्रत्येक के अंदर भलाई है। जो चीज तुम्हारे लिए लाभदायक हो, उसके लिए तत्पर रहो और अल्लाह की मदद माँगो तथा असमर्थता न दिखाओ। फिर यदि तुम्हें कोई विपत्ति पहुँचे, तो यह न कहो कि यदि मैंने ऐसा किया होता, तो ऐसा और ऐसा होता। बल्कि यह कहो कि अल्लाह ने ऐसा ही भाग्य में लिख रखा था और वह जो चाहता है, करता है। क्योंकि 'अगर' शब्द शैतान के कार्य का द्वार खोलता है»। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

छठाः एक ऐसे सशक्त समुदाय का गठन, जो अपने धर्म को सुदृढ़ बनाने और उसके सुतूनों (स्तंभों) को मज़बूत बनाने के लिए सब कुछ न्योछावर करने पर तैयार रहे और इस मार्ग में आने वाले कष्टों की कोई परवाह न करे। इसी के बारे में उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है:

﴿إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمۡ يَرۡتَابُواْ وَجَٰهَدُواْ بِأَمۡوَٰلِهِمۡ وَأَنفُسِهِمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِۚ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ ١٥﴾

(वास्तव में, ईमान वाले वही हैं, जो ईमान लाए अल्लाह तथा उसके रसूल पर, फिर संदेह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से, अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं)। [सूरह हुजुरात: 15]

सातवांः व्यक्तियों एवं दलों में सुधार लाकर दुनिया एवं आख़िरत की खुशी प्राप्त करना तथा सवाब एवं नेमतें प्राप्त करना। इसी के बारे में उच्च एवं

महान अल्लाह ने कहा है:

﴿مَنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَلَنُحۡيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةٗ طَيِّبَةٗۖ وَلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ أَجۡرَهُم بِأَحۡسَنِ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ٩٧﴾

(जो पुण्य का कार्य करे, नर हो अथवा नारी, और वह ईमान वाला हो, तो हम उसे निःसंदेह सर्वोत्तम जीवन प्रदान करेंगे तथा उनके पुण्य के कार्यों का उत्तम बदला भी अवश्य देंगे)। [सूरह अन्-नह्ल : 97]

यह इस्लामी अक़ीदे के कुछ उद्देश्य थे, (जो हमने बयान किए)। दुआ है अल्लाह उन्हें हमारे तथा तमाम मुसलमानों के लिए पूरे करे। निस्संदेह वह दानशील और कृपालु है। अंत में सारी प्रशंसा अल्लाह की है, जो सारे संसार का पालनहार है।

अल्लाह की दया और शांति की जलधारा बरसे हमारे नबी मुहम्मद तथा आपके परिजनों और सभी साथियों पर।

यह किताब अपने अंत को पहुँची। इसके लेखक हैं:

मुहम्मद सालिह अल-उसैमीन

***

सूची

इस्लामी अक़ीदा (आस्था) संक्षिप्त में 2
प्रस्तावना 2
इस्लाम धर्म: 4
इस्लाम के स्तंभ 10
इस्लामी अक़ीदा (श्रद्धा) के मूल आधार 14
अल्लाह तआला पर ईमान लाना 15
फ़रिश्तों पर ईमान 34
ग्रंथों पर ईमान लाना 40
संदेष्टाओं (रसूलों) पर ईमान 42
आख़िरत के दिन पर ईमान 52
तक़दीर (भाग्य) पर ईमान 72
इस्लामी अक़ीदे के उद्देश्य 84

❋❋❋

رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

رسالة الحرمين

ह़रमैन का संदेश

मस्जिद -ए- ह़राम एवं मस्जिद -ए- नबवी के आगंतुकों के लिए मार्गदर्शक
सामग्री विभिन्न भाषाओं में